

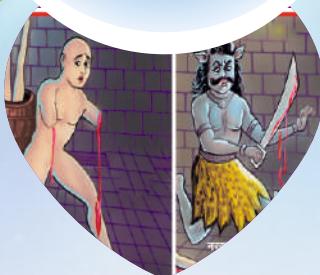
देवगति



मरुष्यगति



स्त्रियंगति



नरकगति

जैन पाठावली

पुस्तक २

श्रेणी २



प्रकाशक

श्री बृहद मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

संचालित

मातृश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा - धार्मिक शिक्षण बोर्ड



धार्मिक शिक्षण बोर्ड

प्रकाशन दिन

वीर संवत : 2549
विक्रम संवत : 2079
ई.स : Feb. 2023

प्रथम आवृत्ति

प्रत : 1500
ज्ञानार्थ : 50 ₹

प्राप्ति स्थान

श्री बृहद मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

: संचालित :

मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड

जयंत आर्केड

राजावाडी सिग्नल, हरीवन वामन पेठेनी उपर
ओफिस नंबर 202, घाटकोपर - (पू), मुंबई- 400077

Office : 9702277914

Chaayaben : 9029933775

Chiragbhai : 9820596646

E-mail : jainshikshanboard@gmail.com

website : jaineducationboard.org



श्रुत स्तंभ



श्री किरणभाई रतिभाई शाह

श्री पूर्वीबेन किरणभाई शाह

चि. तन्वीबेन किरणभाई शाह

California, USA

ज्ञानदान योजनामां सहभागी बनी

ज्ञानप्रसारना कार्यमां सहकार आपी

स्वयंना ज्ञानावरणीय कर्मनो क्षयोपशम करनार

लोकोत्तर पुण्यनो बंध करनार दाता परिवारनो

धार्मिक शिक्षण बोर्ड खूब खूब आभार माने छे

तेओना उत्कृष्ट भावोनी अनुमोदना करे छे

॥ नाणस्स सब्बस्स पगासणाए ॥

श्री बृहद मुंबई वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

Shree Greater Bombay Vardhaman Sthanakvasi Jain Mahasangh

: संचालित :

मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड
Matushree Maniben Manshi Bhimshi Chhadva
Dharmik Shikshan Board,

Jayant Arcade, office No 202, 2nd floor, M.G. Road,
Rajawadi Signal, Ghatkopar (E), Mumbai- 400077

ज्ञानदान महादान

ज्ञान योजना

₹1,00,000/- श्रुतस्तंभ

₹51,000/- श्रुताधार

₹5,000/- श्रुतसहयोगी

₹25,000/- श्रुतप्रभावक

₹2500/- श्रुतसहायक

₹11,000/- श्रुतप्रेरक

₹1000/- श्रुतअनुमोदक

देश-विदेशना हजारो परीक्षार्थीओ श्रेणी 1 थी 24 नी
परीक्षाओ आपीने ज्ञानवृद्धि करी रह्या छे. आपश्री ज्ञानदान योजनामां
सहभागी बनशो अने अन्यने अनुमोदना माटे प्रेरित करशोजी.

Banking Details for DONATION to Dharmik Sikshan Board

A/c Name : Shree Greater Bombay Vardhaman Sthanakvasi
Jain Mahasangh

Bank Name : DENA BANK, Zaveri Bazar, Mumbai - 400 002.

Code : RTGS/BKDNO450008

A/c. No. : 021010025716 Phone : +91 (22) 22018629

चेक / ड्राफ्ट श्री ग्रेटर बोम्बे वर्धमान स्था. जैन महासंघना नामे लखवो.

अतीतनी अटारीएथी

आजे विश्वमां प्रलोभनो वधी रह्यां छे. आजनो मानवी सूर्योदयथी सूर्यास्त नहीं पण मध्यात् सुधी यंत्रवत् दोडी रह्यो छे. समय अने निरांत जेवा शब्दो तो एना जीवनना शब्दकोषमांथी क्याराना रवाना थई गयां छे, त्यारे प्रश्न थाय छे के, आ बधी दोट कोना माटे?

त्यारे जवाब छे के, सुख, समृद्धि, अखूट संपत्ति माटे!

पण शुं आटली दोडादोड कर्या पछी आ बधुं मळे छे खरुं?

कदाच यंत्र युगमां समृद्धि अने संपत्ति मळी जाय छे पण जीवन यंत्रवत् बनी जाय छे अने सुख-शांतिना हवातिया मारवा छतां सुख-शांति तो वहेंत छेटा रही जाय छे. दरेक व्यक्तिको ईर्झे कोई दुःखथी घेरायेली छे. आ बधां दुःखोथी मुक्त थवुं होय तो सर्वज्ञ तीर्थकर परमात्मानो धर्म अने धर्मनी यथार्थ समजण ज सहायक थाय छे.

परिस्थितिने जाणीने समजीने विचक्षण दीर्घद्रष्टा वडीलोनी आगेवानी लझ्ने अंदाजे 60 वर्ष पूर्वे एट्ले के, 30.07.1961 ना बृहद मुंबई स्थानकवासी जैन महासंघनी आगेवानी हेठल मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्डनी स्थापना करवामां आवी.

जैनधर्मना 32 आगममांथी प्रेरणा लई आगम सागरमांथी मंथन करीने सरल भाषामां तेनो बोध थई शके ते माटे, समस्त विश्वनां स्थानकवासी जैनोना जैनधर्म आधारित ज्ञाननो विकास थाय ते माटे धार्मिक शिक्षण बोर्ड प्रारंभमां श्रेणी एकथी सातना अभ्यासक्रमना पाठ्यपुस्तको तैयार कर्या. आ पाठ्यक्रम तैयार करवामां पूज्य श्री संत-सतीजीओनो अविस्मरणीय साथ सहकार मळ्यो.

पछी क्रमशः संघना विद्वानोए course नो विकास कर्यो, जेने कारणे आजे एकथी चोवीस श्रेणीनो course तैयार थई गयो छे अने ज्यारे-ज्यारे जरूर लागी त्यारे नवी आवृत्तिमां फेरफार पण कर्या छे. वर्तमाने फरीथी आ book फेरफार साथे नवा स्वरूपमां आपणे प्रकाशित करीए छीए. आनी पाछल्नो हेतु आबालवृद्ध बधां आमां जोडाई शके अने वधुमां वधुलोको परमात्माना धर्मनी सन्मुख थाय, एज छे.

समय अनुसार क्रमिक विकास करतां-करतां आजे मातुश्री मणीबेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड संस्कार सिंचन साथे संस्कार संपन्न भावि पेढीना निर्माण माटे कार्यशील छे.

Course तैयार करवामां अनेक उपकारी गुरु भगवंतो, गुरुणी भगवंतोनुं मार्गदर्शन मल्युँ छे. अने ए मार्गदर्शन अनुसार अभ्यासु श्रावक-श्राविकाओए पोतानुं योगदान आप्युँ छे. ए दरेकनुं अमे अभिवादन करीए छीए.

आ Course ने कारणे आज सुधीमां लाखो लोको परीक्षाना माध्यमथी जैनत्वना संस्कारने पाम्या अने भविष्यमां पण वधुमा वधु लोको आ अभ्यासक्रममां जोडाइने सुसंस्कारने पामीने पोताना भाविने उज्जवल बनावे ए ज अभ्यर्थना.

धार्मिक शिक्षण बोर्डनी प्रवृत्ति

1. 60 वर्षोथी जैनधर्मना ज्ञान प्रसार अर्थे जैनशाळा अने महिला मंडळनी धार्मिक परीक्षाओनुं आयोजन करनारी संस्था
 2. परीक्षा माटे जरूरी पुस्तकोनुं प्रकाशन.
 3. शिक्षकोना अने विद्यार्थीओना समेलनो योजी तेमने अभ्यासक्रमनी समजण आपवी.
 4. श्रेणीनी परीक्षाओनां ईनामी मेलावडानुं आयोजन करवुं.
 5. ज्ञानदाता शिक्षकोनुं अभिवादन.
 6. बाल पाठावली एवम एकथी चोवीस श्रेणी सुधीनो विस्तृत अभ्यासक्रम उपलब्ध अने नवी श्रेणीनो विकास.
 7. जैन धर्मनुं ऊँडुं ज्ञान धरावता अनुभवी अने कुशल ज्ञानदाता द्वारा धार्मिक अने आध्यात्मिक शिबिरोनुं आयोजन.
 8. Technology ना माध्यमथी online, मौखिक अने लिखित परीक्षा दर वर्षे जान्युआरी अने जुलाईमां लेवामां आवे छे.
 9. वैश्विक (global) परीक्षानुं आयोजन, online certificate अने इनाम वितरण. आ पुस्तकमां छद्मस्थावस्थाने कारणे
- जिनाज्ञा विरुद्ध काँई पण लखायुं होय तो मिच्छामि दुक्कडम्.

1. सूत्र विभाग - 40 marks

- | | |
|------------------------------------------|----|
| 1. संपूर्ण सामायिक अर्थ सहित कंठस्थ..... | 01 |
| 2. प्रथम 5 थी 8 पाठनी समजण | 13 |

2. सामान्य समजण विभाग - 20 marks

- | | |
|-----------------------------------------|----|
| 1. वर्तमानमां बिराजतां 20 तीर्थकर प्रभु | 31 |
| 2. पांच अभिगम | 32 |
| 3. चार गतिनी समजण | 36 |
| 4. नव तत्त्वना नाम तथा समजण | 41 |

3. संस्कार विभाग - 15 marks

- | | |
|-------------------------|----|
| 1. जैन धर्मनी श्रेष्ठता | 44 |
| 2. आत्म विचारणा | 45 |
| 3. जन्मदिननी उजवणी | 48 |
| 4. तिथिनुं पालन | 50 |

4. धर्म अने विज्ञान - 5 marks

52

5. कथा विभाग - 10 marks

- | | |
|-------------------|----|
| 1. मरिचि | 58 |
| 2. रोहिणेय चोर | 62 |
| 3. मेघकुमार | 65 |
| 4. हेल्पफूल हेन्ड | 69 |

6. काव्य विभाग - 10 marks

- | | |
|---------------------|----|
| 1. उवसग्गहर स्तोत्र | 72 |
| 2. आहार विवेक | 73 |
| 3. गुणसमृद्धि | 74 |
| 4. भवने सुधारी ल्यो | 75 |



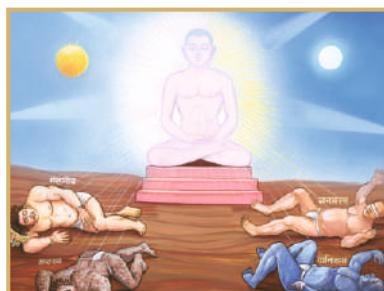
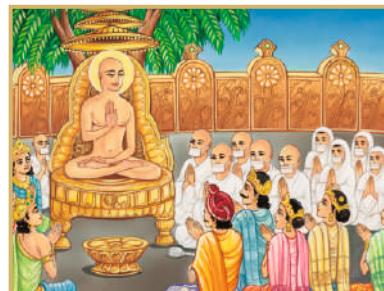
लोगस्ससूत्र

लोगस्स - संपूर्ण लोकमां

उज्जोयगरे - उद्योत- ज्ञानरूपी प्रकाशना करनारा,

धर्म तिथ्यरे -

धर्मरूपी तीर्थनी स्थापना करनारा



जिणे - रागद्वेषना विजेता, जिनेश्वर

अरिहंते - अरिहंत,

कर्मरूपी शत्रुने हणनारा

कितईसं

- कीर्तन, स्तुति करीश

चउविसंपि

- चोबीस तीर्थकरो

केवली

- केवलज्ञानीनी

उसभ

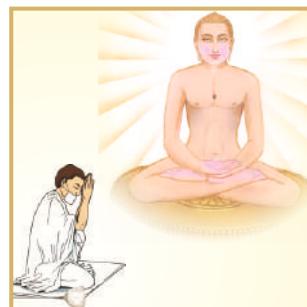
- श्री ऋषभदेव स्वामीने

मजियं च

- श्री अजितनाथ स्वामीने अने

वंदे

- वंदन करुंछुं.



संभव	- श्री संभवनाथ स्वामीने
मधिनंदणं च	- श्री अभिनंदन स्वामीने अने
सुर्मईंच	- श्री सुमतिनाथ स्वामीने अने
पउमप्पहं	- श्री पद्मप्रभ स्वामीने
सुपासं	- श्री सुपार्श्वनाथ स्वामीने
जिणं च	- जिनेश्वरने अने
चंदप्पहं वंदे	- श्री चंद्रप्रभ स्वामीने वंदन करुं छुं.
सुविहिं च	- श्री सुविधिनाथ स्वामीने अने
पुष्पदंतं	- जेमनुं बीजुं नाम श्री पुष्पदंत प्रभु छे
सियल	- श्री शीतलनाथ स्वामीने
सिज्जंस	- श्री श्रेयांसनाथ स्वामीने
वासुपूज्जं च	- श्री वासुपूज्य स्वामीने अने
विमल	- श्री विमलनाथ स्वामीने
मणंतं च	- श्री अनंतनाथ स्वामीने अने
जिण	- जिनने
धर्मं	- श्री धर्मनाथ स्वामीने
संतिं च	- श्री शांतिनाथ स्वामीने अने
वंदामि	- वंदन करुं छुं.
कुंथुं	- श्री कुंथुनाथ स्वामीने
अरं च	- श्री अरनाथ स्वामीने अने
मल्लिं वंदे	- श्री मल्लिनाथ स्वामीने वंदन करुं छुं.
मुणिसुव्वयं	- श्री मुनिसुव्रत स्वामीने
नमिजिणं च	- श्री नमिनाथ स्वामीने अने



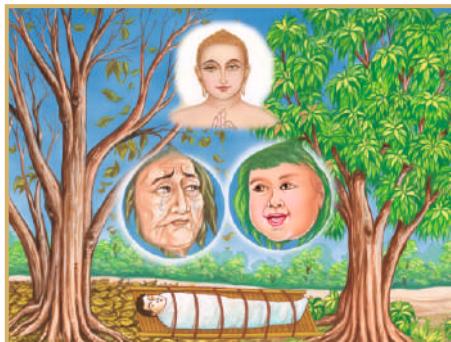
वंदामिं	- वंदन करूँछुं.
रिष्टनेमि	- अरिष्टनेमि (श्री नेमिनाथ स्वामीने)
पासं तह	- श्री पार्श्वनाथ स्वामीने तथा
वद्धमाणं च	- श्री वर्धमान (महावीर) स्वामीने अने
एवं मए	- आरीते मारा द्वारा
अभिथुआ	- स्तुति करायेला (तीर्थकरो केवा छे?)
विहुय रय मला	- कर्मरूपी रज अने मेलथी रहित

पहीण जर मरणा -

जरा (घडपण), मरणथी मुक्त

चउविसंपि -

आवा चोवीस (तथा अन्य पण)



जिणवरा - जिनेश्वर देव

तित्थयरा - तीर्थकर, तीर्थनी स्थापना करनारा

मे - मारा उपर

पसीयंतु - प्रसन्न थाओ.

कित्तिय - वाणीथी स्तुति करायेला

वंदिय - मस्तकथी वंदित

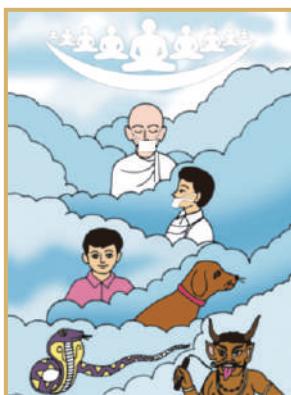
महिया - ईन्द्र आदिथी विशेष रीते पूजायेला

जे ए - जे आ

लोगस्स - आखा लोकमां (संसारमां)

उत्तमा

- सौथी श्रेष्ठ, उत्तम



सिद्धा - सिद्ध भगवंतो

- | | |
|-----------------|---------------------------|
| आरुग | - आरोग्य, आत्मिक शांति |
| बोहिलाभं | - बोधि, सम्यग् धर्मनो लाभ |
| समाहिवर | - समाधि |
| मुत्तमं | - श्रेष्ठ भाव |

दिन्तु
चंदेसु
निम्मलयरा
आईच्चेसु
अहियं
पयासयरा
सागरवर गंभीरा
सिद्धा
सिद्धिं
मम दिसंतु

- आपो
- चंद्रमाओथी पण
- विशेष निर्मल
- सूर्यथी पण
- अधिक
- प्रकाशना करनारा
- स्वयंभूरमण समुद्रथी पण वधारे गंभीर
- सिद्ध भगवंतो
- सिद्धि (मोक्ष)
- मने बतावो (आपो).



**तीर्थकर भगवाननी स्तुति करवाथी
आत्मा हळुकर्मी बने छे,
समकितने प्राप करे छे अने दर्शन विशुद्धि करे छे.**

करेमि भंते सूत्र

द्रव्य थकी सावज्ज जोग सेववानां पच्चक्खाण - कायाथी पापकारी व्यापार-
प्रवृत्तिनो परित्याग करु छुं.

क्षेत्र थकी आखा लोक प्रमाणे -

आखा लोकना प्रमाणमां

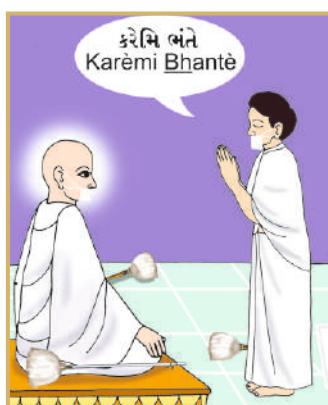
काळ थकी बे घडी उपरांत न पालुं त्यां सुधी
तेनो समय केटलो

बे घडी - 48 मिनिट

उपरांत मारी ईच्छापर्यंत

भाव थकी छ कोटिए पच्चक्खाण -

(मारा शुद्ध अंतःकरण बडे छ प्रकारे पापना योगोने त्यागु छुं.)



करेमि - करु छुं

भंते! - हे पूज्य !

(आपनी साक्षीथी हुं)

सामाईं - सामायिक

सावज्जं - सावद्य - पापकारी

जोंग - कार्यनो

पच्चक्खामि - परित्याग करु छुं.

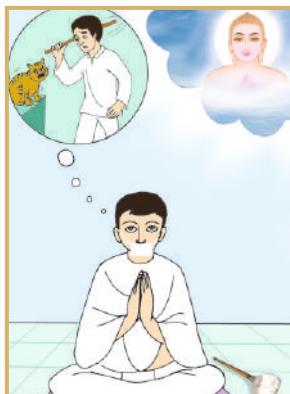
जाव - ज्यां सुधी

नियमं - मारा (धारेला) नियमनी

पञ्जुवासामि - उपासना करु छुं, पालना करु छुं.

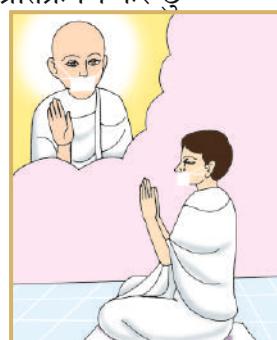
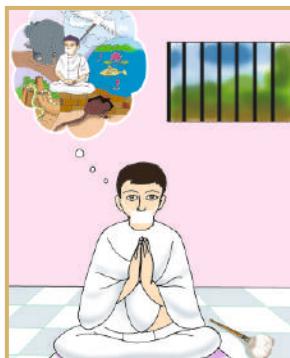
दुविहं - बे करण अने

तिविहेण	- त्रण योगथी
न करेमि	- हुं स्वयं पाप करुं नहीं
न कारवेमि	- बीजा पासे करावुं नहीं (आ बे करण छे.)
मणसा	- मनथी
वयसा	- वचनथी
कायसा	- कायाथी
(आ त्रण प्रकारना योग छे.)	



बे करणे त्रण योगथी गुणतां -
छ कोटि ए प्रत्याख्यान थया
तस्स - तेनुं
(भूतकाळमां लागेलां पापोनुं)
भते! - हे पूज्य! (हे भगवान!)
पडिक्कमामि - प्रतिक्रमण करुं छुं

निंदामि	- आत्मसाक्षीए निंदा करुं छुं
गरिहामि	- गुरुसाक्षीए गर्हा करुं छुं



अप्पाणं - मारा आत्माने
वोसिरामि - वोसिरावुं छुं.
 ते पाप व्यापारथी दूर रहुं छुं.

નમોત્થુણ સૂત્ર

પહેલું નમોત્થુણ શ્રી સિદ્ધ ભગવંતોને કરું છું.

નમોત્થુણ - નમસ્કાર હો

અરિહંતાણ - અરિહંત

ભગવંતાણ - ભગવંતોને

આઇગરાણ - શ્રુતધર્મની આદિ કરનારા

તિત્થયરાણ - ધર્મતીર્થ - ચતુર્વિઘ સંઘની સ્થાપના કરનારા

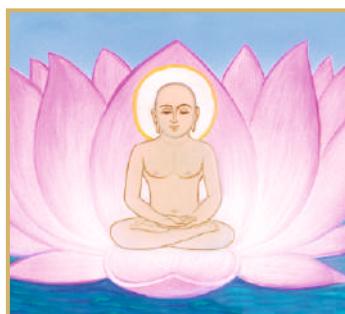
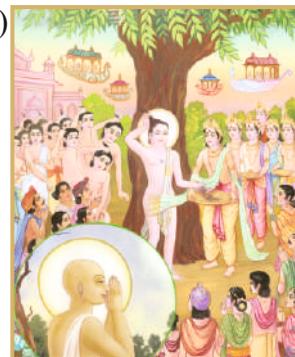
(સાધુ, સાધ્વી, શ્રાવક, શ્રાવિકા)

સયં સંબુધ્ધાણ - પોતાની જાતે

સમ્યક્ બોધને પામેલા

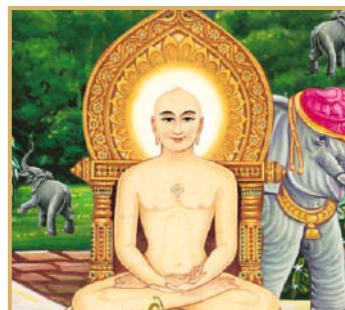
પુરિસુત્તમાણ - પુરુષોમાં ઉત્તમ (શ્રેષ્ઠ)

પુરિસસિહાણ - પુરુષોમાં સિંહ સમાન



પુરિસવર પુંડરિયાણ -

પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ પુંડરિક કમળ સમાન



પુરિસવર ગંધહત્થીણ -

પુરુષોમાં શ્રેષ્ઠ ગંધહસ્ત સમાન

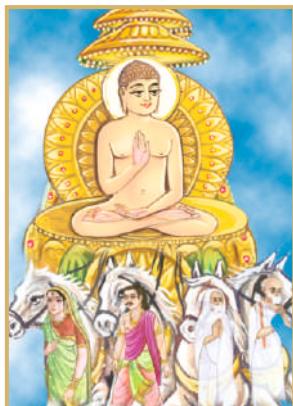
લોગુત્તમાણ - લોકમાં ઉત્તમ

લોગનાહાણ - લોકના નાથ

लोगहियाणं
लोगपईवाणं
लोगपज्जोयगराणं

अभयदयाणं
चकखुदयाणं
मगदयाणं
सरणदयाणं
जीवदयाणं
बोहिदयाणं
धम्म दयाणं
धम्मदेसयाणं
धम्मनायगाणं

- लोकना हित करनारा
- लोकमां दीपक समान
- लोकमां ज्ञाननो प्रकाश करनारा
- अभयदानना देनारा
- श्रुतज्ञानरूपी नेत्र देनारा
- धर्मार्गना देनारा
- सर्व जीवोने शरण देनारा
- संयमरूपी जीवनना देनारा
- बोधि-सम्यक्त्वना देनारा.
- चारित्र धर्मनुं दान करनारा
- धर्मना शुद्ध स्वरूपनो उपदेश देनारा
- धर्मसंघ अने तीर्थना नायको.



धम्मसारहीणं - धर्मरूपी रथना सारथि

धम्मवर चाउरं चक्कवट्टीणं - चारे गतिनो

अंत करनारा, प्रधान धर्म चक्रवर्ती रूप

दीवोत्ताणं - संसार समुद्रमां डूबतां जीवोने

द्वीप (बेट) समान

सरण गई पईठाणं - चार गतिमां धसी

पडता जीवोने शरणरूप, आधाररूप

अप्पडिह्य

- अप्रतिहत, कोई पण अन्य दार्शनिकोथी पराभव न पामे

वरनाण दंसण धराण - एवा श्रेष्ठ केवळज्ञान, केवळदर्शनना धारक

वियटु छउमाण - घाती कर्मथी रहित

जिणाण - पोते रागद्वेषने जितनारा

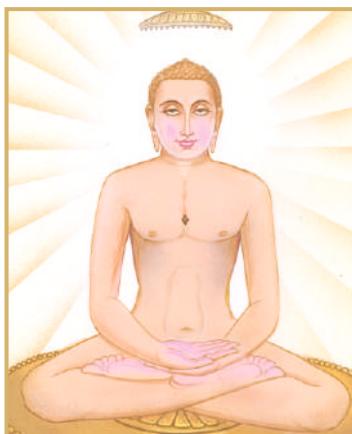
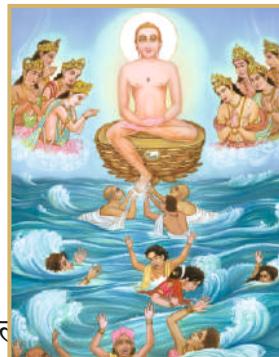
जावयाण - बीजाने रागद्वेषथी जितावनारा

तिन्नाण - पोते संसार सागरथी तरी गयेला

तारयाण - बीजाने संसार सागरथी तारनारा

बुध्धाण - स्वयं (जीवादि तत्त्वोनो) बोध पामेत

बोहियाण - बीजाने जीवादि तत्त्वोनो बोध पमाडनारा



मुत्ताण - पोते कर्मोथी मुक्त थयेला

मोयगाण - बीजाने कर्मबंधनथी

मुक्त करावनारा

सञ्चन्नुण - सर्वज्ञ, लोकना सर्व

पदार्थोने जाणनारा

सञ्च दरिसीण - सर्वदर्शी, सर्व पदार्थने देखनारा

सिव - निरूपद्रव, उपद्रवरहित (कल्याणरूप)

मयल - अचल, स्थिर स्वरूप

मरूय - रोगरहित

मणंत - अनंत, अंतरहित

मक्खय - क्षयरहित (अक्षय)

मव्वाबाह - बाधा पीडारहित, अव्याबाध

मपुणराविति - अपुनरागमन, ज्यांथी फरी
पाछा आववुं नथी अर्थात् जन्ममरणथी रहित

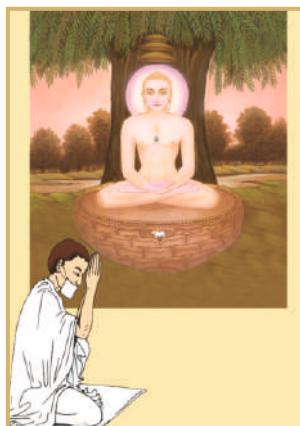
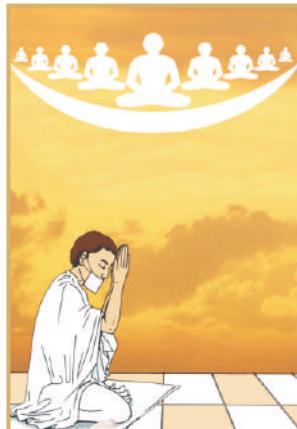
सिध्धि गई नामधेयं -

सिद्ध गति नामना (मोक्ष)

ठाणं संपत्ताणं - स्थानने, पदने पामेला

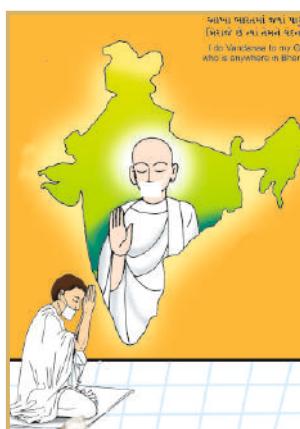
नमो जिणाणं - नमस्कार हो जिनेश्वर भगवानने

जिय भयाणं - भय मात्रने जीती लीधा छे एवा



बीजुं नमोत्थुणं
श्री अरिहंत भगवंतोने करु छुं.

नोंध : बीजा नमोत्थुणंमां “ठाणं संपत्ताणं”ना
स्थान पर “ठाणं संपावित कामाणं” बोलवुं.



त्रीजुं नमोत्थुणं

त्रीजुं नमोत्थुणं मारा, (तमारा) धर्मगुरु,
धर्मचार्य, धर्मोपदेशक, सम्यक्त्व रूपी
बोधिबीजना दातार, जिनशासनना शणगार
एवी अनेक सर्वे शुभ उपमाए करी बिराजमान
जे-जे पूज्य साधु- साध्वीजीओ वीतरागदेवनी
आज्ञामां ज्यां-ज्यां विचरतां हशे, त्यां-त्यां
तेओने मारी (तमारी) समय-समयनी वंदना
होजो.

अतिचार निवृत्ति सूत्र

द्रव्य थकी सावज्ज जोग सेववानां पच्चकखाण, क्षेत्र थकी आखा लोक प्रमाणे, काळ थकी बे घडी उपरांत न पाळुं त्यां सुधी, भाव थकी छ कोटिए पच्चकखाण कर्या हतां ते पूरां थतां पाळुं छुं.

एवा नवमा सामायिक व्रतना

पंच अईयारा जाणियव्वा	- पांच अतिचार जाणवा योग्य छे पण
न समायरियव्वा	- आचरण करवा योग्य नस्थी
तं जहाते	- ते आ प्रकारे छे
आलोउं	- तेनी आलोचना करुं छुं
मण दुप्पणिहाणे	- मनस्थी खराब विचार कर्या होय
वय दुप्पणिहाणे	- खराब वचन बोल्या होय
काय दुप्पणिहाणे	- कायाथी पापकारी काम कर्यु होय
सामाईयस्स सर्ई अकरणयाए-	सामायिक करी छे के नहीं तेनो पोताने ख्याल न रह्यो होय.

सामाईयस्स अणवद्वियस्स करणयाए - सामायिक अव्यवस्थित, जेम-तेम करेल होय (समय पूरो थतां पहेलां सामायिक पाळी लीधी होय),

तस्स मिच्छामि दुक्कडं	- तेनुं मारुं पाप मिथ्या थाओ.
सामाईयं सम्मं काएणं	- सामायिक व्रतने सम्यक् प्रकारे कायाथी,
न फासियं	- स्पर्श्यु न होय
न पालियं	- पाळ्यु न होय
न तीरियं	- पार उतार्यु न होय
न किर्द्वियं	- कीर्तन कर्यु न होय
न सोहियं	- शुद्धतापूर्वक कर्यु न होय

न आराहियं

- आराधना करी न होय

आणाए अणुपालियं न भवई-

वीतरागदेवनी आज्ञा अनुसार पालन
कर्यु न होय.

तस्स मिच्छामि दुक्कडं

- तेनुं मारुं पाप मिथ्या थाओ.

सामायिकमां दस मनना, दस वचनना, बार कायाना आ बत्रीस दोषमांथी कोई दोष लाग्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

सामायिकमा स्त्रीकथा, भत्तकथा, देशकथा, राजकथा आ चार विकथामांथी कोई विकथा करी होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.
(अहं बहेनोए 'पुरुषकथा' बोलवुं.)

सामायिकमां आहारसंज्ञा, भयसंज्ञा, मैथुनसंज्ञा, परिग्रहसंज्ञा आ चार संज्ञामांथी कोई संज्ञानुं सेवन कर्यु होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

सामायिकमां अतिक्रम, व्यतिक्रम, अतिचार, अनाचार जाणतां-अजाणतां मन, वचन, कायाए करी कोई दोष लाग्यो होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.



सामायिक व्रत विधिए लीधुं, विधिए पाळ्युं, विधिए करतां अविधिए थयुं होय तो तस्स मिच्छामि दुक्कडं.

सामायिकमां कानो, मात्रा, मींडु, पद, हस्व, दीर्घ, अक्षर, गाथा, सूत्र, ओछुं, अधिक, विपरीत भणायुं होय तो अरिहंत अनंत सिद्ध केवली भगवंतनी साक्षीए तस्स मिच्छामि दुक्कडं.



लोगस्स सूत्रनी समजण

सामायिकनो पांचमो पाठ लोगस्स सूत्र छे.

लोगस्स सूत्रमां चोवीस तीर्थकर भगवंतोनी स्तुति छे, स्तवना छे, नाम स्मरण छे. माटे, लोगस्स सूत्रनुं बीजुं नाम **चतुर्विशंति स्तव** पण छे.

चतुः एट्ले चार, विशंति एट्ले वीस, चार अने वीस = चोवीस. चोवीस तीर्थकर परमात्मानी स्तुति होवाथी चतुर्विशंति पण एक नाम छे.

आ विश्वमां सर्व श्रेष्ठ, सर्वोत्तम अने सर्वोत्कृष्ट कोई तत्त्व होय तो ते छे अरिहंत भगवंतो! आपणा अनंत-अनंत उपकारी, तीर्थकर परमात्माना नामनुं स्मरण करतां, तेमना गुणगान गातां, तेमनो महिमा करतां-करतां भक्त हृदय डोली ऊठे छे, झूमी ऊठे छे, नर्तन करे छे, कीर्तन करे छे.

पवननी एक लहेरखी आवे अने पुष्पो, पर्णो, वृक्षनी डाळीओ जेम हवानी साथे-साथे लहेराय छे, तेम भाव सभर हैयाथी प्रभु स्मरणमां मस्त बनीने भक्तजनो डोली ऊठे छे, तेने कीर्तन कहे छे. माटे, लोगस्स सूत्रनुं बीजुं एक नाम **उत्कीर्तन सूत्र** पण छे.

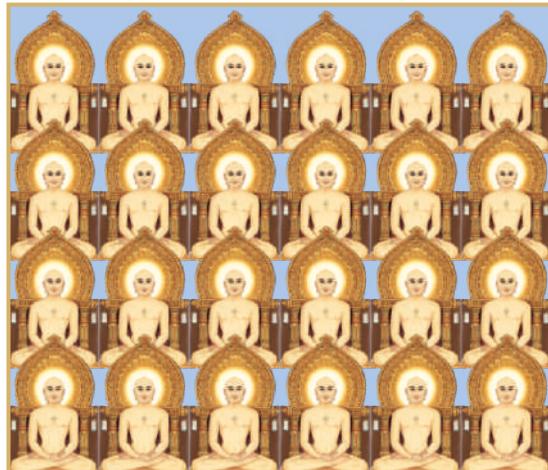
केवळज्ञाननी प्राप्ति पछी अरिहंत परमात्मा तीर्थनी स्थापना करे छे. साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप धर्मतीर्थनी स्थापना करे छे, माटे तीर्थकर कहेवाया छे.

तीर्थ एट्ले किनारो. तीर्थ आपणा माटे भवसागर तरवानुं श्रेष्ठ आलंबन छे. जेनाथी संसार सागर पार करी शकाय छे, ते धर्म तीर्थ छे.

आपणा भरत क्षेत्रमां छ आरामांथी 3 जा अने 4 था आरामां 24 ज तीर्थकरो होय छे, त्यारे प्रश्न थाय के चोवीस ज केम?

तीर्थकर भगवंतो उत्तमोत्तम पुण्यना स्वामी होय छे, ज्यारे तेमनो जन्म थाय छे ते समये देरेक ग्रह अने नक्षत्र तेना उच्चतम स्थानमां होय छे. श्रेष्ठ स्थितिमां होय छे.

खगोळ शास्त्रनो अभ्यास
एम कहे छे के, एक अर्ध
काळचक्रमां, छ आरा
दरम्यान अवकाशना बधा
ग्रहो उच्च स्थितिमां होय.
तेवो योग 24 वार ज बने
छे. आवी उच्च
अवकाशीय स्थितिना
योगमां एक समये एक ज



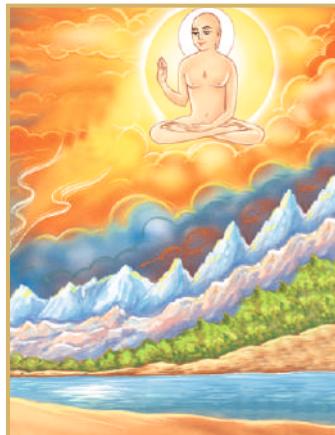
तीर्थकर जन्म ले छे. माटे तीर्थकर प्रभु चोवीस ज होय छे. तेथी बे तीर्थकरो एक
समये एक साथे होता नथी. भरत क्षेत्रनी जेम ऐरावत क्षेत्रमां पण आज रीते 24
तीर्थकर भगवंतो थाय छे.

ज्यारे महाविदेह क्षेत्रमां ओछामां ओछा 20 अने वधुमां वधु 160 तीर्थकरो
होय छे. महाविदेह क्षेत्रमां हंमेशा तीर्थकर विद्यमान होय छे.

तीर्थकर परमात्मा राग अने द्वेषने पूर्णपणे जीतनारा छे. तेओ राग अने द्वेषथी
मुक्त वीतरागी छे. तो प्रश्न ए थाय छे के, “तित्थयरा मे पसीयंतु” एवी प्रार्थना केम
करीए छीए?

वृक्ष पासे जईए तो धगधगता तापमां पण मीठो छांयडो ने ठंडी हवा मळे छे.
नदी के सरोवर पासे जईए त्यारे तेनी शीतलतानो स्पर्श थाय छे. तेम प्रभु पासे
जवाथी, तेना शरणे जवाथी, प्रार्थना करवाथी, फकत नाम स्मरण करवा मात्रथी...
साहजिक रीते प्रभुना गुणो आपणामां प्रगटे छे. तेमनी वीतराग अवस्थानो स्पर्श
थाय छे. जेना शरणे जईए तेना जेवा थईए ए न्याये आपणे पण प्रभु जेवा बनी जईए.
भाव एटला ज होय छे. प्रभु! हुंतारो छुं... मारे पण तारा जेवुं थावुं छे.

मारा अरिहंत भगवान सूर्यथी पण श्रेष्ठ छे.
कारण के, सूर्य तो मर्यादित क्षेत्रने, मर्यादित
काळ माटे प्रकाशित करी शके छे. ज्यारे तीर्थकर
परमात्मा त्रणेय लोकमां, त्रणेय काळमां ज्ञाननो
प्रकाश पाथरनारा छे. सूर्यनो उदय अने अस्त
थाय छे, ज्यारे प्रभुना ज्ञाननो एकवार उदय थया
पछी क्यारेय अस्त थतो नथी.



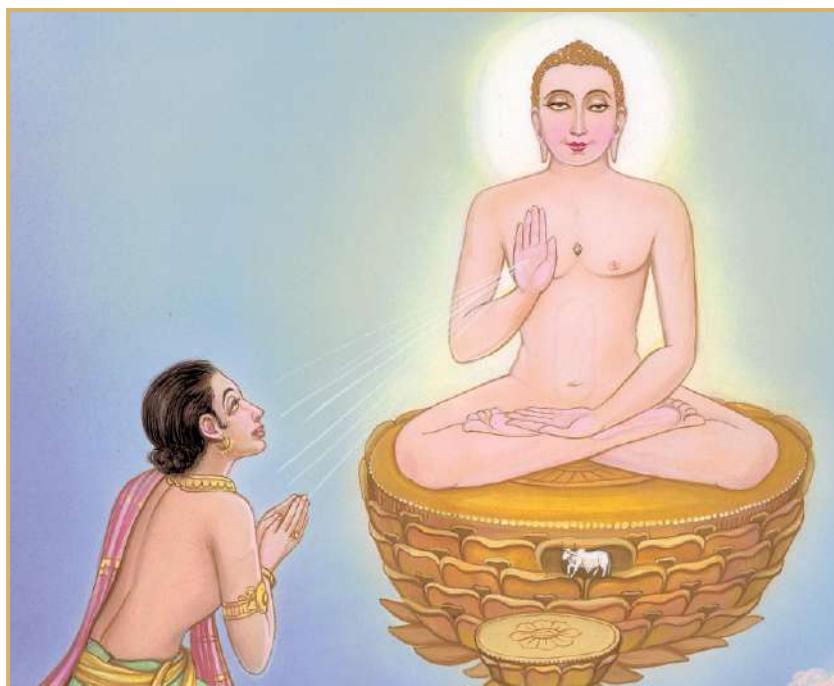
तीर्थकर प्रभु चंद्रथी अधिक सौम्य अने
शीतल छे. शरणे आवनारने शांति अने
शीतलता प्रदान करनारा छे. चंद्रनी कळामां
रोज वधु-घट थाय, चंद्रग्रहणमां तेनो प्रकाश
ढङ्काय जाय, ज्यारे प्रभुना ज्ञानमां वधघट थती
नथी, तेथी तेओनी सौम्यता के शीतलतामां पण
वधघट थती नथी.

अनंतज्ञानना स्वामी
सागरथी पण वधु गंभीर अने
विशाल छे. सागरमां भरती
ओट आवे छे. प्रभुनी
गंभीरतामां क्यारेय ओट
आवती नथी.



लोगस्स सूत्र द्वारा तीर्थकर भगवंतो पासे ‘आरुग्ग बोहिलाभं’, ‘समाहि वर मुत्तमं दिंतु’ अने ‘सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु’ नी याचना करवामां आવे छे.

1. हे प्रभु ! मने आत्मिक आरोग्य प्राप्त थाओ. मारा जन्म-मरणना महान रोगने दूर करो, जन्म मरणना फेरामांथी, जंजाळमांथी मने मुक्त करो.
 2. भवोभव सत्यदर्शन रूपी बोधि प्राप्त थाओ.
 3. गमे तेवा दुःखो के प्रतिकूळताओ वच्चे, दोक परिस्थितिमां समभावमां, समाधि भावमां रही शकुं, एवुं आत्मिक बल प्राप्त थाओ.
 4. अने अंते मने सिद्धदशा प्राप्त थाओ.
- भक्त - सर्वोत्तम व्यक्ति पासे आवी सर्वोत्तम मांगणी करे छे.



લોગસ્સ સૂત્રના અનેક લાભ છે.

1. પરમાત્માના નામનું સ્મરણ જ પરમ કલ્યાણકારી છે.
2. નીચ ગોત્ર કર્મનો ક્ષય થાય છે અને ઉચ્ચ ગોત્ર કર્મનો બંધ થાય છે.
3. પાપ કર્મોનો ક્ષય થાય છે.
4. શરણ ભાવથી ન પ્રતા અને વિનય ગુણ પ્રગટે છે, અહંકાર ઘટવા લાગે છે.
5. દોષો દૂર થાય છે. ગુણોનું પ્રાગટ્ય થાય છે.
6. આધ્યાત્મિક વિકાસ થાય છે.
7. દર્શન વિશુદ્ધિ થાય છે, એટલે આપણી શ્રદ્ધા દ્રઢ અને નિર્મલ થાય છે.
8. મનની શક્તિ અગાધ છે, જેવું વિચારો તેવું થાય છે. પરમાત્માના positivity થી ભરપૂર નામ અને ગુણોને યાદ કરવાથી, સ્મરણ કરવાથી તેમના ગુણોને આપણા તરફ આકર્ષિત કરી શકાય છે.
9. પરમાત્માની ભક્તિ થકી આનંદ, હર્ષ, ઉલ્લાસ, પ્રસન્નતા, અહોભાવ અને નર્તનના ભાવો પ્રગટે છે, તેનાથી આપણાં mind-body ઉપર બહુ સારી effect થાય છે. આપણા શરીરમાં રહેલી hormones ગ્રંથીમાંથી એવો રસ ઝરે છે જે, આપણને તનનું અને મનનું સ્વાસ્થ્ય પ્રદાન કરે છે. માનસિક રીતે કષાયોથી દૂર થઈએ છીએ અને શ્રેષ્ઠની નજીક જર્ઝે છીએ, જે જીવનમાં શાંતિ, પ્રસન્નતા અને સમાધિ આપે છે.



અપેક્ષિત પ્રશ્નો:

1. લોગસ્સનું બીજું નામ શું છે? કેમ?
2. કીર્તન એટલે શું?
3. તીર્થમાં કોનો કોનો સમાવેશ થાય છે?
4. ભગવાનને સૂર્યથી પણ શ્રેષ્ઠ કેમ કહેવામાં આવ્યાં છે?
5. લોગસ્સ સૂત્ર બોલવાના કેટલાં લાભ બતાવવામાં આવ્યાં છે? કોઈ પણ ત્રણ લાભ લખો.

કરેમિ ભંતે સૂત્રની સમજણ

સામાયિકનો ૬ઠો પાઠ કરેમિ ભંતે સૂત્ર છે. આ પાઠ દ્વારા સામાયિકની પ્રતિજ્ઞા લેવામાં આવે છે માટે, કરેમિ ભંતે સૂત્રનું બીજું નામ પ્રતિજ્ઞા સૂત્ર છે.

એક હોય છે પ્રવૃત્તિનો ધર્મ અને એક હોય છે નિવૃત્તિનો ધર્મ... સામાયિક એ નિવૃત્તિનો ધર્મ છે.

18 પ્રકારના પાપની વૃત્તિ અને પ્રવૃત્તિનો ત્યાગ કરીને મન-વચન-કાયાના યોગોને સમભાવમાં રાખવા તે સામાયિક છે.

સામાયિક એ સમભાવની કે સમત્વભાવની સાધના છે.

સામાયિક એ 'સ્વ'માં રહેવાની 'સ્વ' સાથે અનુસંધાન સાધવાની સાધના છે.

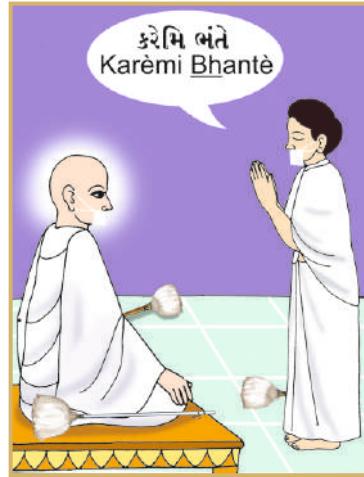
સામાયિકમાં આત્મા અને આત્મગુણોનું ચિંતન કરવાનું છે. 'પર' સાથેનું connection cut કરવાનું છે.

સામાયિકની પ્રતિજ્ઞા ભગવાન અથવા ગુરુ ભગવંત તેમજ સ્વયંના આત્માની સાક્ષીએ લેવાય છે.

સામાયિક બે ઘડી માટે લેવાય છે.

1 ઘડી એટલે 24 minutes. બે ઘડી એટલે 48 minutes. સામાયિક બે ઘડી માટેનું ચારિત્ર છે. એક સામાયિકનો સમય 48 minutes છે. કોઈ સાધક એક સાથે બે, ત્રણ, ચાર, પાંચ વગેરે સામાયિકની પ્રતિજ્ઞા લઈ શકે છે.

સાધુ-સાધ્વીજીને જીવનભરની સામાયિક હોય છે. એટલે એમ કહી શકાય કે, શ્રાવકની સામાયિક એ સાધુ જીવન કે સંયમી જીવનનો આંશિક આસ્વાદ છે.



सामायिक द्वारा दान, शील, तप अने भाव ए चारेय श्रावक धर्मनुं पालन थाय छे.

दान-धर्मनी पालना - बे धडी अथवा ज्यां सुधी सामायिकनो नियम लीधो होय त्यां सुधी छ-कायना जीवोने अभयदान अपाय छे.

शील-धर्मनी पालना - सामायिकमां शील ब्रतनुं पालन थाय छे.

तप-धर्मनी आराधना - सामायिकमां ध्यान, जप, स्वाध्याय कराय छे. चारेय प्रकारनां आहारनो त्याग होय छे.

भाव-धर्म आराधना - सामायिकमां आत्मानुं चिंतन, शास्त्र अभ्यास, जिनवाणी श्रवण द्वारा मन शुभ भावमां रहे छे.

करण - क्रिया करवानी पद्धति एटले करण. क्रिया 3 प्रकारे थाय छे, तेथी करण त्रण प्रकारनाछे.

- (1) क्रिया (स्वयं, पोते) करवी,
- (2) क्रिया बीजा पासे कराववी,
- (3) कोईक क्रिया करतुं होय तेनी अनुमोदना करवी.

योग - क्रिया करवाना साधनने योग कहे छे. जेना ३ प्रकार छे.

- (1) मन
- (2) वचन
- (3) काया

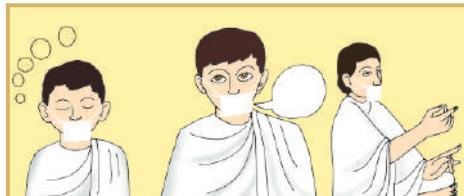
कोटि - करण अने योगना गुणाकार थी आवती संख्याने कोटि कहेवाय छे.

3 करण x 3 योग = 9 कोटि थाय छे. जे नीचे प्रमाणे छे.

1. मनथी करूं नहीं,
2. वचनथी करूं नहीं,
3. कायाथी करूं नहीं.



4. मनथी करावु नहीं
5. वचनथी करावु नहीं
6. कायाथी करावु नहीं
7. मनथी अनुमोदना करूं नहीं
8. वचनथी अनुमोदना करूं नहीं
9. कायाथी अनुमोदना करूं नहीं



श्रावक छ कोटिना सामायिकना पच्चकूखाण करी शके छे. ते बे करण अने त्रण योगथी प्रतिज्ञा ले छे. संसारना व्यवहारोथी connect होवाथी तेओने अनुमोदनानी प्रतिज्ञा होती नथी. केटलांक श्रावको सामायिकनी प्रतिज्ञा आठ कोटिथी करे छे, तेओने मात्र मनथी अनुमोदनानी छूट होय.

साधु-साध्वीजी भगवंतोने नव कोटि पच्चकूखाण होय छे.

पाप-दोषोनु सेवन थयुं होय तो पोताना आत्मानी साक्षीए आलोचना करवी, निंदा करवी तेने **निंदामि** कहेवाय छे.

गुरु समक्ष पारदर्शक बनीने, खुल्ला दिले जेवुं बन्युं तेवुं कहीने क्षमा मांगवी, आलोचना करवी तेने **गरिहामि** कहेवाय छे.

निंदामि अने गरिहामि बे एवी pills छे, दवा छे, जे आपणा आत्माने कर्म-रोगथी, भव-रोगथी मुक्त करे छे. आत्माने शुद्ध बनावे छे.

सामायिकना अनेकानेक लाभ छे.

- (1) पापमय प्रवृत्तिनो त्याग होवाथी नवा पापकर्म बंधाता नथी. घरमां बारी बाराण बंध करी पडदा लगावीए छीए त्यारे घरमां कचरो आवतो नथी. तडको अने वरसादथी पण बच्ची शकाय छे. तेम सामायिक व्रत धारण करतां आत्म घरमां आवतां कर्मो अटकी जाय छे.
- (2) पच्चकूखाण द्वारा मन अने ईन्ड्रियोने control मां राखवानो अभ्यास थाय छे.

- (3) તેટલા સમય માટે જીવોને અભયદાન અપાય છે.
- (4) આત્મભાવમાં રહેવાથી નવા કર્મો બંધાતા નથી. સાથે-સાથે પહેલા બાંધેલા અનંત કર્મોની નિર્જરા થાય છે.
- (5) સ્વાધ્યાય આદિ શુભ પ્રવૃત્તિ થકી પુણ્યનો બંધ થાય છે.
- (6) સામાયિકમાં આયુષ્યનો બંધ થાય તો દેવગતિનું આયુષ્ય બંધાય છે.
- (7) બે ઘડી માટે પૂર્ણ નિર્વિકલ્પ દશામાં શુદ્ધ આત્મભાવમાં રહે તો જીવને કેવળજ્ઞાન પ્રાપ્ત થાય છે.

ધીરે-ધીરે મક્કમપણે શુદ્ધ આત્મભાવમાં રહેવાનો વારંવાર અને નિરંતર તેમજ સતત અભ્યાસ કરવો એ આત્મા માટે હિતકારી છે. માટે જ સામાયિક અવશ્ય કરવી જોઈએ.

ભગવાને સામાયિકને આવશ્યક કહેલ છે.

સામાયિકમાં શું ન કરાય?

- સામાયિકમાં સંસારની કોઈ પણ પ્રવૃત્તિન કરાય.
- T.V.નો ઉપયોગ ન કરાય.
- ખાવા-પીવાની પ્રવૃત્તિન કરાય.
- ખોટી વાતચીત ન કરાય. હાંસી, મજાક, ગપ્પાન મરાય.
- ઊંઘ ન આવી જાય તેનું ધ્યાન રાખવું.
- વિજાતીયનો સ્પર્શ ન કરાય.
- છાપા, magazine ન વંચાય.



सामायिकमां शुं कराय?

सामायिकमां धर्म क्रिया जेवी के, स्वाध्याय, जाप, साधना, कायोत्सर्ग, ध्यान, जिनवाणी श्रवण, धार्मिक पुस्तकोनुं वांचन करी शकाय.

मन, वचन, कायाना योगने मंद करी, मन अने चित्तने ध्यान साधनामां जोडी आत्म अनुसंधान साधवानो प्रयास करवो जोईए.

सामायिकमां होईए अने पूज्य संत-सतीजी पधारे तो, सामायिक लीधी न होय तेनी आज्ञा लईने गौचरी वहोरावी शकाय, श्रेष्ठ एवा सुपात्रदाननो लाभ लई शकाय.

जीवोनी जतना करतां-करतां हाथमां गुच्छो लईने, जागृति पूर्वक, ईरिया समितिनुं पालन करतां-करतां, नीचे जोतां-जोतां चालीने पूज्य संत-सतीजीने गौचरी माटेना घर बताववा जई शकाय. स्थान पर पाढा आव्या पछी ईरियावहियंनो कायोत्सर्ग करी, कदाच कोई जीवनी विराधना थई होय तो ते माटे प्रायश्चित करवुं जोईए.

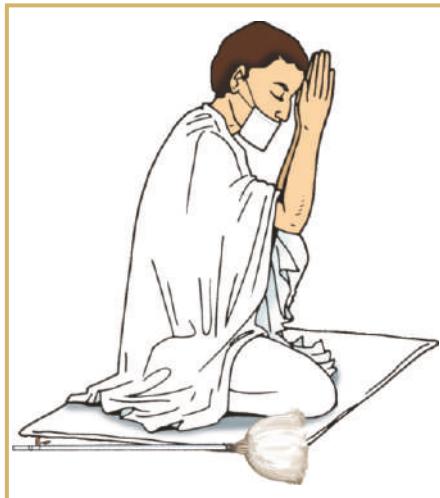
सामायिकनी साधना आत्म साधना छे, आत्मभावनी साधना छे माटे शरीरने स्नान कराववुं जरूरी नथी. हा, मनने शुद्ध करवुं जोईए. शुभभाव द्वारा मनशुद्धि करवी जोईए.



अपेक्षित प्रश्नो:

1. सामायिक एशेनो धर्म छे?
2. सामायिकमां तप धर्मनी आराधना कई रीते करी शकाय?
3. करण एटले शुं? ते केटलां प्रकारना छे?
4. सामायिकमां गौचरी वहोराववी होय तो शुं करवुं पडे?
5. कोटि एटले शुं? श्रावक केटली कोटिए सामायिकना पच्चक्र्खाण करी शके?

નમોત્થુણં સૂત્રની સમજણ



નમોત્થુણં સૂત્ર સામાયિકનો 7
મો પાઠ છે.

નમોત્થુણં સૂત્ર **શક્રસ્તવ** અને
પ્રણિપાત સૂત્ર તરીકે પણ ઓળખાય
છે.

પ્રથમ દેવલોકના અધિપતિ
શક્રેન્દ્ર મહારાજ અને અન્ય દેવો
નમોત્થુણં સૂત્ર દ્વારા જિનેશ્વર
ભગવાનની સ્તુતિ, સ્તવના અને ભક્તિ

કરે છે, માટે **શક્રસ્તવ** તરીકે પણ ઓળખાય છે.

આ સૂત્રમાં વિશેષ રૂપે નમસ્કાર - પ્રણિપાત કરવામાં આવે છે તેથી **પ્રણિપાત સૂત્ર**
પણ કહેવાય છે.

લોગસ્સ સૂત્ર એક કાવ્ય છે અને પદ્ય સ્વરૂપે છે. તેમાં ચોવીસ તીર્થકર પ્રભુના
નામની સ્તુતિ અને સ્મરણ છે, જ્યારે નમોત્થુણં સૂત્ર ગદ્ય સ્વરૂપે છે, તેમાં અનંત
તીર્થકર ભગવંતો અને અનંત સિદ્ધ ભગવંતોના ગુણોની સ્તુતિ છે.

નમોત્થુણં સૂત્રના એક-એક શબ્દે ભક્તિ અને ભાવોની ઊર્મિઓનો સાગર
લહેરાય છે.

પરમાત્માના એક-એક ગુણની સ્તવના કરતાં એવા ભાવ થાય છે.

અહો! અહો! મારા પ્રભુ... અહો! અહો! મારા પરમાત્મા!

એટલું જ નહીં પણ, ભક્ત હૃદય શરણાગત બનીને પ્રાર્થે છે.

નમોત્થુણં વીરતાનું પ્રતિક છે.

**प्रभु तारुं गीत मारे गावुं छे.
प्रभु हुं तारो छुं अने तारा जेवुं मारे बनवुं छे.**

पहेला अने बीजा नमोत्थुण्मां समानता छे कारण के, अरिहंत परमात्मा अने सिद्ध परमात्मामां घणी साम्यता छे. फक्त एक शब्दनो फरक छे. पहेला नमोत्थुण्मां 'ठाण-संपत्ताण' एटले के "मोक्षगतिने प्राप्त थयेला" शब्द प्रयोग छे. ज्यारे बीजा नमोत्थुण्मां 'ठाण संपावितकामाण'... "ते स्थानने प्राप्त करवानी कामना छे जेने," एवो शब्द प्रयोग छे. हकीकतमां अरिहंत परमात्माने कोई पण प्रकारनी कामना होती नथी परंतु अरिहंत अने सिद्ध वच्चेना तफावतने बताववा शास्त्रकरे ते शब्दनो प्रयोग कर्यो छे.

सिद्ध परमात्मा आठे कर्मोनो क्षय करी, सर्व कर्मोनो क्षय करी सिद्ध गतिने पामे छे, मुक्तिने पामे छे. आत्मानी सर्वोच्च स्थितिने प्राप्त करनारा छे. देह रहित अवस्थामां, आत्मभावमां, सिद्धशिलानी उपर सिद्धक्षेत्रमां बिराजमान छे.

अरिहंत परमात्माए चार घाति कर्मोनो क्षय कर्यो होय छे. चार अधाति कर्मोनो क्षय बाकी होय छे. ते कर्मो क्षय थाय पछी तेओ सिद्ध गतिने प्राप्त करे छे.

त्रीजुं नमोत्थुणं पोताना धर्म-गुरुने करवानुं छे. गुरु भगवंतो जिनवाणीनुं वहन करनारा, प्रगट करनारा अने अत्यारे ज्यारे अरिहंत परमात्मा सदेहे हाजर नथी त्यारे तेओ जिनशासननी परंपराने आगळ वधारे छे.

तीर्थकर भगवंतो सयंसंबुद्धाणं-स्वयंसंबुद्ध छे. तेओ स्वयं बोधने पामे छे माटे, तेमना कोई गुरु होता नथी.

जेम चक्रवर्ती चारेय दिशाना दरेक देशने जीतीने पोताना एक छत्री राज्यनी स्थापना करे छे, तेम तीर्थकरो अनंत काळना अनंत कर्मशत्रुओने जीतीने चारे गति

पर विजय प्राप्त करी जिनशासननी स्थापना करे छे. माटे, तेओ धर्म चक्रवर्ती कहेवाय छे.

अरिहंत अने सिद्ध भगवंतो अप्पडिहय वरनाण-दंसणधराण-अप्रतिहत श्रेष्ठ ज्ञान दर्शनना धारक छे.

केवळज्ञान अने केवळदर्शनने कोई पराजित करी शकतुं नथी. तेथी तेने अप्रतिहत अने वर एटले श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन कहेवाय छे.

परमात्मा स्वयं रागद्वेषने जीतनारा, बीजाने जीतवानो मार्ग बतावनारा छे. पोते संसार सागरथी तर्या, बीजाने तारनारा छे. स्वयं बोधने पाम्या, बीजाने बोध पमाडनारा छे. स्वयं कर्मोथी मुक्त बन्या अने बीजाने मुकितनो मार्ग बताडनारा छे.

तीर्थकर भगवंतो आपणने आठ प्रकारनुं दान आपे छे.

- | | |
|--------------------|-------------------------------|
| 1. अभयदान | 5. संयम रूपी जीवन |
| 2. ज्ञानरूपी चक्षु | 6. सम्यक्त्व रूप बोधि |
| 3. मोक्ष मार्ग | 7. श्रुत अने चारित्र रूप धर्म |
| 4. शरण | 8. धर्मनो उपदेश आपनारा छे. |

नमोत्थुणं सूत्रमां सिद्ध गतिनी विशेषता दर्शक सात शब्दो छे.

- | | |
|---------------------|------------------------|
| 1. कल्याणरूप छे. | 5. क्षय रहित छे. |
| 2. स्थिर स्वरूप छे. | 6. पीडा रहित छे. |
| 3. रोग रहित छे. | 7. जन्म-मरणथी रहित छे. |
| 4. अंत रहित छे. | |

नमोत्थुणं सूत्रनी समजण थकी जेम-जेम परमात्माना गुणोनो अने तेनो अर्थ बोध थतो जाय, तेम-तेम परमात्मा प्रत्येनो अहोभाव वधतो जाय अने आपणा मनमां, चित्तमां तेमनी गुणमय छबी अंकित थई जाय.

આ વિશ્વમાં સર્વ શ્રેષ્ઠ જો કોઈ હોય તો તે પરમાત્મા જ છે. પામવા જેવું, મેલવવા જેવું, પ્રાસ કરવા જેવું કાંઈ હોય તો તે પરમ તત્ત્વ જ છે, સિદ્ધત્વ જ છે.

તત્ત્વ ચિંતકો કહે છે; સૌથી મહત્વનું એ છે કે, તમે શું માનો છો? તમારી માન્યતા (belief) શું છે? કારણ કે, આપણી માન્યતા જ આપણી સર્વ પ્રવૃત્તિના મૂલમાં છે.

જે માન્યતા ચિંતમાં ઊંડે સુધી છ્વાઈ જાય છે, Alfa level સુધી જાય છે, તે સંસ્કાર બની જાય છે, સહજ બની જાય છે.

નમોત્થુણં સૂત્રનો અભ્યાસ કરતાં-કરતાં પરમાત્માની ગુણમય અવસ્થા પર લગાવ થાય છે, ત્યાર પછી રૂચિ થાય છે...ક્રમશ: દિન-પ્રતિદિન શ્રદ્ધાનું level વધતું જાય છે, જે બોધિબીજનું કારણ બની જાય છે.

નમોત્થુણંનું આસન :

અર્ધ વિરાસન અર્થાત જમણા પગને જમીન પર ઊંધો ઢાળીને, ડાબા પગને ઊભો રાખીને, બને હાથને જોડીને- અંજલીબદ્ધ કરીને મસ્તકે લગાવીને બેસવું.

આ આસન અપ્રમત્તદશાનું સૂચક છે. તે ઉપરાંત શરીર વિજ્ઞાનની દ્રષ્ટિએ પણ અનેક લાભ થાય છે.



અપેક્ષિત પ્રશ્નો:

1. લોગસ્સ અને નમોત્થુણંમાં શું ફરક છે?
2. તીર્થકર પ્રભુ આપણને કેટલાં પ્રકારનાં દાન આપે છે? કયા?
3. નમોત્થુણં સૂત્રનો અભ્યાસ શેનું કારણ બને છે?
4. સર્વ પ્રવૃત્તિના મૂલમાં શું હોય છે?
5. નમોત્થુણં સૂત્રનાં બીજા કયા નામ છે?

अतिचार निवृत्ति सूत्रनी समजण

सामायिक सूत्रनो आठमो पाठ अतिचार निवृत्ति सूत्र छे.

सामायिकनी साधना श्रेष्ठ साधना छे, उत्तम साधना छे. आ साधना दरम्यान श्रावकोने केवा-केवा प्रकारना पाप-दोष लागी शके छे, ते अतिचार निवृत्ति सूत्रमां बताववामां आव्यु छे.

आपणे अतिचार सूत्रना बोध द्वारा सामायिकमां लागता दोषोने जाणीए. जाणतां के अजाणतां कोई पाप-दोष लाग्यां होय तो हृदयपूर्वक तेनी आलोचना करीए. फरीथी तेवा दोष न लागे तेवी जागृत्ति साथे प्रायश्चित्त करीए अने आपणा व्रत अने लीधेलां नियमोने, करेला पञ्चक्‌खाणने, सामायिकनी साधनाने उतरोत्तर शुद्ध बनावीए.

दोष सेवननी क्रमिकता

सामायिक व्रत लीधां पछी, व्रत ग्रहण कर्या पछी, सामायिक व्रतने अने तेमां लीधेलां बीजा नियमोने तोडवानी ईच्छा करवी एटले **अतिक्रम**.

ईच्छा थया पछी नियमने तोडवानी तैयारी करवी एटले **व्यतिक्रम**.

नियमने तोडवा तैयार थई जवुं ते **अतिचार** अने

व्रत के नियम तूटी जाय तेवा दोषोनुं सेवन करवुं एटले **अनाचार**.

जेनाथी सामायिकनुं व्रत तूटे, लीधेला नियमोनी मर्यादा तूटे एवा पांच प्रकारना **अतिचार** बताववामां आव्या छे.

- (1) सामायिकमां मनथी खराब विचार कर्या होय.
- (2) शास्त्रोनुं पठन, अभ्यास अने जप साधना करवाना स्थाने खराब वचनो, दोषयुक्त वचनोनो प्रयोग कर्यो होय.
- (3) कायाथी कोइ पापकार्य के हिंसा करी होय.
- (4) सामायिक व्रत ग्रहण कर्यु छे, एवी जागृत्ति राखवाने बदले सामायिक लीधी छे, एनो ख्याल जन रह्यो होय.

(5) भावपूर्वक एकाग्रचित्ते सामायिक करवाना स्थाने अव्यवस्थित, जेम-तेम करीने समयनी पहेलां ज सामायिक पाळी लीधी होय.
आवा पांच प्रकारना अतिचार छे.

सामायिकमां मन, वचन अने कायाने धर्माराधनामां जोडवा जोईए. तेम छतां मनथी पापकारी चिंतन कर्यु होय, वचनथी पापकारी वचनो बोल्यां होय, संसारी वातो करी होय, कायाथी व्यवस्थित बेठां न होय, लांबा पग कर्या होय, टेको दईने आराम कर्यो होय, ऊंघ आवी गई होय वगेरे...



मनना दस, वचनना दस, कायाना बार. कुल 32 प्रकारना दोष सेवनथी सामायिक मलिन थाय छे, अतिचारनुं सेवन थाय छे, तेथी तेनुं निरीक्षण करीने तेनुं प्रायश्चित्त करवानुं होय छे.

सामायिक दरम्यान जे वातचीत धर्म भावनामां विक्षेप उभो करे, तेने विकथा कहे छे, **विकथा चार छे**.

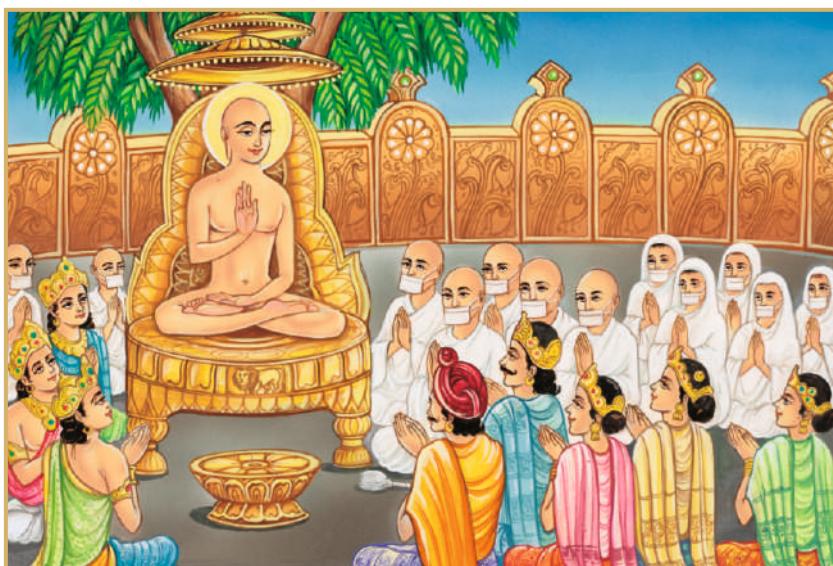
- (1) **स्त्रीकथा** - स्त्री विषयक अने स्त्रीओ माटे पुरुष विषयक, तेना रूप-गुण आदि विषे वातो करवी.
- (2) **भत्तकथा** - भोजन विषे वातो करवी.
- (3) **देशकथा** - देश विषे वातो अने चर्चा करवी.
- (4) **राजकथा** - राज्य विषे वातो अने चर्चाओ करवी.

आवी वातचीत धर्म भावमां विक्षेप करे छे, माटे आवी वातचीतथी दूर ज रहेवुं जोईए.

આપણી મોહયુક્ત ઇચ્છાઓને સંજ્ઞા કહે છે. તેના ચાર પ્રકાર છે.

- (1) આહાર સંજ્ઞા
- (2) ભય સંજ્ઞા
- (3) મૈથુન સંજ્ઞા
- (4) પરિગ્રહ સંજ્ઞા

સામાયિકમાં આવી બધી ઇચ્છાઓ ઉત્પન્ન ન થાય તેની જાગૃતિ રાખવી. આ રીતે વિસ્તૃત રૂપે સામાયિક વ્રતમાં લાગતાં દોષોની જાણકારી મેલવી, તેવા દોષ ન લાગે તેવી જાગૃતિ રાખી સામાયિક વ્રતની પાલના કરવી જોઈએ.



अतिचार निवृत्ति सूत्रना लाभ



1. श्रावक दोष सेवन प्रति जागृत बने छे.
2. कदाच तेनी भूल थई जाय, तो आलोचनादि करीने पाढो फरे छे.
3. सामायिक व्रतनी भावना अखंड रहे छे.
4. छद्मस्थ अवस्थामां व्रत ग्रहण करनार कोई पण साधक पूर्णतः निर्दोष रीते व्रतनुं पालन प्रायः करी शकतां नथी, तेवा साधकोने अतिचार निवृत्तिनो chance मझे छे. तेना द्वारा तेव्रतने शुद्ध-विशुद्ध बनावी शके छे.



अपेक्षित प्रश्नोः

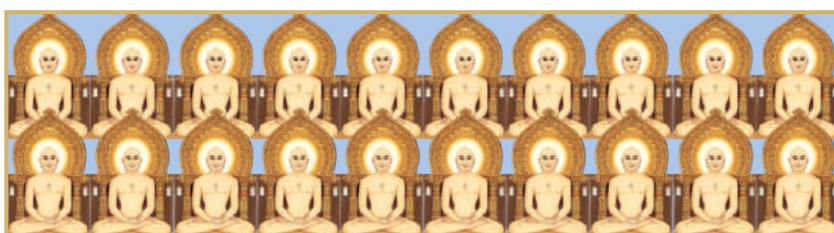
1. सामायिकमां मन, वचन अने कायाना केटला दोषो लागवानी संभावना होय ?
2. अतिचार निवृत्ति सूत्रना केटला लाभ बतावामां आव्या छे ?
प्रथम लाभ लाखो.
3. संज्ञा एटले शुं ?
4. अतिचार एटले शुं ?
5. देशकथा कोने कहेवाय ?



वर्तमानमां बिराजतां 20 तीर्थकर प्रभु

वर्तमानमां आपणा आ क्षेत्रमां तीर्थकर प्रभु नथी, पण आपणा क्षेत्र जेवुं ज एक अन्य क्षेत्र छे, जे महाविदेह क्षेत्रना नामस्थी ओळखाय छे. त्यां अत्यारे 20 तीर्थकर प्रभु विचरी रह्यां छे. सामायिक लेता पहेलां तथा अन्य कोइपण धर्म आराधना करतां पहेलां दा.त. - प्रतिक्रमण, आगम वांचन वगेरे करतां पहेलां आपणे तेमनी ज आज्ञा लइए छीए. अर्हीं जेम आपणा 24 तीर्थकर भगवंत थयां, तेम अत्यारे त्यां 20 तीर्थकर प्रभु छे. आवो जाणीए तेमना नाम अने तेओनुं नाम-स्मरण करी कर्मोनो क्षय करीए.

- | | |
|---------------------------|---------------------------|
| 1. श्री सीमधर स्वामी | 11. श्री बज्रधर स्वामी |
| 2. श्री जुगमधर स्वामी | 12. श्री चंद्रानन स्वामी |
| 3. श्री बाहु स्वामी | 13. श्री चंद्रबाहु स्वामी |
| 4. श्री सुबाहु स्वामी | 14. श्री भुजंगदेव स्वामी |
| 5. श्री सुजातनाथ स्वामी | 15. श्री इश्वर स्वामी |
| 6. श्री स्वयंप्रभ स्वामी | 16. श्री नेमप्रभ स्वामी |
| 7. श्री ऋषभानन स्वामी | 17. श्री वीरसेन स्वामी |
| 8. श्री अनंतवीर्य स्वामी | 18. श्री महाभद्र स्वामी |
| 9. श्री सुरप्रभ स्वामी | 19. श्री देवजश स्वामी |
| 10. श्री विशालप्रभ स्वामी | 20. श्री अजीतसेन स्वामी |





पांच अभिगम



धर्म स्थाननी Entry

दूरथी धर्म स्थान देखाय एटले
 बे हाथ जोडवा, वचनथी मौन थई जवुं.
 धर्म स्थानकमां पहोंचीए एटले सर्व प्रथम
 त्यांनी रज आपणा मस्तके अत्यंत अहोभावपूर्वक लगाडवी.

अभिगम एटले शुं ?

पूज्य संत- सतीजीओना दर्शन करवा जती वखते जे नियमोनुं पालन करवामां आवे छे, तेने अभिगम कहेवाय छे.

अभिगम एटले protocol, संसारना कोईपण कार्यक्षेत्रमां जवुं होय तो ए जग्याए जवाना अमुक नियमो होय जेम के, school मां जवुं होय तो uniform compulsory होय, office मां जवुं होय तो एनो पण कोई dress code होय, वगेरे...

तेवी ज रीते गुरुना दर्शन करवा, धर्मस्थानकमां जवुं होय तो तेनां पण केटलांक नियमो होय छे, rules होय छे, जेने अध्यात्मनी भाषामां अभिगम कहेवाय छे. जे जग्याए जईए ते जग्याना नियमोनुं, त्यांना protocols नुं पूर्णरीते पालन थाय, तो ते जग्या अने त्यां काम करनारा दरेकनो सारो विकास थाय छे, खबू सारी प्रगति थाय छे, ते successful बने छे. जो सामान्य स्थानोमां नियम पालननुं आटलुं सुंदर परिणाम मळी शके तो गुरुदर्शन करवा माटे उपाश्रय जेवी श्रेष्ठ जग्याए त्यांना नियमनुं, त्यांना अभिगमनुं पूर्ण निष्ठा अने श्रद्धाथी पालन करवामां आवे तो तेनुं फळ पण श्रेष्ठतम ज मळे.

अभिगमनुं पूर्ण निष्ठाथी पालन करवुं ए अत्यंत कल्याणकारी छे.

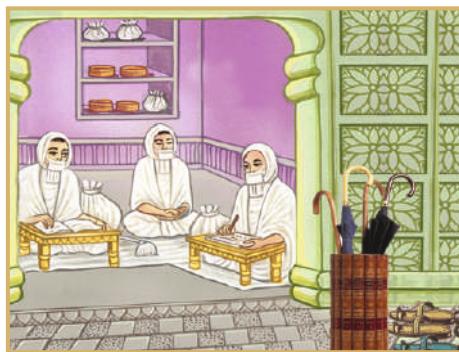
गुरु शिष्यना संबंधनी net practice नुं ground, ए छे **अभिगम**. प्रभु साथेनी final practice मां pass करावे, ए होय छे **अभिगम**. आत्मगुणोनुं oxygen अने सफळतानी चाकी एटले **अभिगम**.

अभिगम पांच होय छे.

1. **सचेतनो त्याग :-** जेमां जीव छे, चेतन छे जेम के, शाकभाजी, fruits, फूल वगैरे वस्तुओ उपाश्रयमां के धर्मस्थानकोमां गुरुना दर्शन करवा जईए त्यारे न लई जवाय. कारण के, कदाच तेनुं आयुष्य पूर्ण थाय अने त्यां तेनुं मृत्यु थई जाय तो ए मृत्यु वखतनी पीडाना negative vibrations गुरुना अवग्रहमां फेलाय अने वातावरणने disturb करे.



संतो सचेत वस्तुना त्यागी होय छे, जो सचेत वस्तुओ आपणी साथे होय, तो तेनो संघट्ठो-अचानक स्पर्श थवानी पण संभावना छे, ते दोषनुं कारण छे.



2. **अचेतनो विवेक :-** जेमां जीव नथी, तेवी वस्तु लई जवामां पण विवेक राखवो जोईए. जेम के, mobile silent पर राखवो, लाकडी के खुरशीना अवाज न करवा, थेलीनो अवाज न आवे एवी थेली लाववी, दांतियाथी वाळ न ओळवा वगैरे...जेनाथी गुरुनी भावधारा disturb थाय तेवुं काँई न करवुं जोईए. dress code नो पण विवेक राखवो जोईए.

तेमज राजा महाराजाओनी साथे अथवा नेताओनी साथे शस्त्र वगेरे हिंसाकारी साधनो होय छे, पोताना पद अनुसार मुगट वगेरे धारण कर्या होय, तेवी वस्तुओ माटे विवेक जरूरी छे.



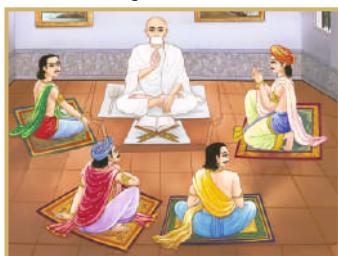
3. अंजलीकरण :- गुरुना सांनिध्यमां प्रवेश करीए के पछी दूरथी ज उपाश्रयनुं building देखाय ज्यां, गुरु बिराजमान होय त्यास्थी ज हाथ जोडाई जवा जोईए, जेनाथी गुरु साथे एक divine connection थाय छे. जोडायेला

हाथ ego ने zero करवानी process छे.

4. उत्तरासंग :- एट्ले खेस. जेने आपणे मुहपत्तीनी जेम राखीए. उत्तरासंगना कारणे वायुना जीवोनी जतना थाय छे. साथे ज आपणां मुखमांथी वायु, गेस के थुंक उडे, कोई अशुचि अथवा bacteria बहार आवता होय तो ते भूलथी पण



गुरुनां अवग्रह सुधी जाय तो गुरुनी अशातना थाय छे. ए अशातनाथी बचवा उत्तरासंग/ मुहपत्ती/ रुमाल जरूर राखवो जोईए.



5. मननी एकाग्रता :- गुरुनी समक्ष जईए त्यारे मननी एकाग्रता राखवी जोईए. मारां गुरु ज मारा माटे अग्र छे माटे, मन, वचन, कायाना योगोने स्थिर करी गुरु साथे अनुसंधान साधवुं जोईए. जो

मननी एकाग्रता न होय, तो गुरुनी energy ने के एमना साधनामय vibration ने झीली शकाता नथी, माटे एकाग्र चित्ते गुरु समक्ष द्रष्टि करी बेसवुं जोईए.

अभिगमने engine बनावशुं तो आध्यात्मिक अने आर्थिक दरेक क्षेत्रमां सफळता जरूर मेल्वी शकीशुं. फक्त दर्शन करवा अने अभिगम सहित दर्शन करवा आ बन्नेमां घणो फरक छे. अभिगम सहितना दर्शन तथा श्रवण ए संपूर्ण विनय, विवेक, भक्तिभाव, अहोभावपूर्वक होय छे. माटे अभिगम सहितना दर्शन, श्रवण आपणने अनंतगणो वधु लाभ अपावे छे.

माटे ज्यारे पण संत-दर्शन, श्रवण माटे जईए त्यारे पांच अभिगम याद राखी बराबर अमलमां मूकवा.

1) कायिक पर्युपासना - हाथ पगने संकुचित करी, विनयथी हाथ जोडी, प्रभु अथवा गुरुनी सन्मुख बेसवुं.

2) वाचिक पर्युपासना - हे भगवान ! आ ज तथ्य छे, आज स्वीकृत छे, इच्छित छे, सत्य छे, संदेह रहित छे. आ प्रमाणे वचनो बोलवा.

3) मानसिक पर्युपासना - अत्यंत धर्मअनुरागथी अनुरक्त बनवुं.

अपेक्षित प्रश्नो :-

1. अभिगम एट्लेशुं ?
2. अभिगमथी थतां फायदा जणावो
3. अभिगम केटलां छे ?
4. उत्तरासंग एट्लेशुं ?
5. अंजलीकरण शेनुं प्रतिक छे?

चार गति

जेवा आपणा कर्मो, तेवो आपणो आवतो भव. जेवां आपणां आजना कर्मो, तेवुं आपणुं भविष्य. एटले के, आपणुं भविष्य आपणा हाथमां छे.

ज्ञानीओए आपेली समज द्वारा आपणे आपणुं जीवन, आपणी आज अने काल, आ जन्म अने आवता जन्मो सुधारी शकीए छीए अने श्रेष्ठ बनावी शकीए छीए.

ते माटे, आपणे आपणा आवता जन्मो ज्यां थई शके छे, ते चार गति विषे समजीए.

गति चार छे - देव, मनुष्य, तिर्यच अने नारकी

बे शुभ गति छे - देव अने मनुष्य

बे अशुभ गति छे - तिर्यच अने नारकी.

जीवनुं आ भवनुं जीवन पूर्ण थतां मृत्यु पामीने, पोते करेलां शुभ-अशुभ कर्मो प्रमाणे चारमांथी कोई एक गतिमां जन्म ले छे.

सारां अने शुभ कर्मो थकी शुभगति प्राप्त थाय छे, खराब अने अशुभ कर्मो थकी अशुभगति प्राप्त थाय छे.

चारेय गति विषे विस्तारथी समजीए

देवगति :

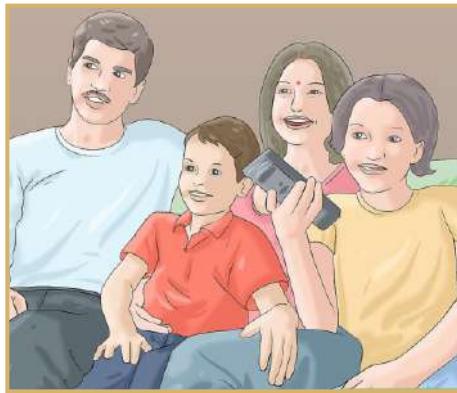
देवगतिमां अनेक प्रकारनां सुख साधनो होय छे. आपणे कल्पना पण न करी शकीए एटलां धन-वैभव होय छे. दीर्घ (लांबु) आयुष्य होय छे. सुख अने सुख ज होय छे. बाकी त्रण गतिनां प्रमाणमां दुःख बहु ज अल्प होय छे.



तप-जप, धर्म साधना करनार, दयावान, करुणावान, गुणवान जीवो देवगतिमां जाय छे.

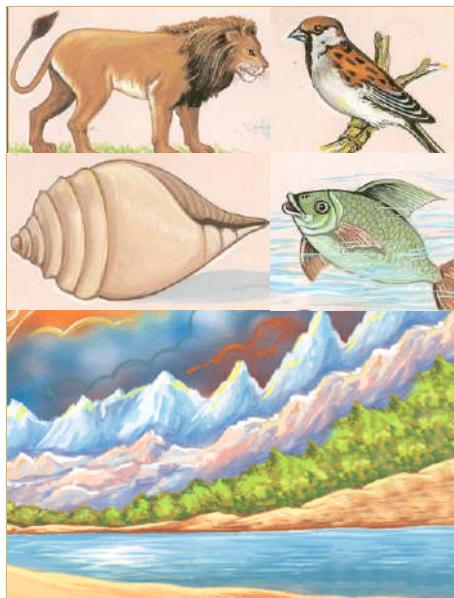
મનુષ્યગતિ :

મનુષ્યગતિમાં સુખ અને દુઃખ બંને હોય છે. સરલસ્વભાવી, વિનયી, નિઃસ્વાર્થ ભાવનાવાળા મનુષ્ય ગતિ પ્રાપ્ત કરે છે. પુણ્યશાળી લોકો, જેમણે પુણ્ય વધારે અને પાપ ઓછું કર્યું હોય તેને મનુષ્ય ગતિ મળે છે.



તિર્યંચગતિ :

આ અશુભ ગતિ છે. તિર્યંચ એટલે પશુ, પક્ષી, પ્રાણીઓ તથા કિડી, મંકોડા, મચ્છર, ભમરા વગેરે, તેમજ પૃથ્વી, પાણી, અગ્નિ, વાયુ અને વનસ્પતિ! અહીંયા દુઃખ વધારે છે. આપણે આપણી આજુબાજુ રહેલાં પશુ, પક્ષીઓને જોઈશું તો તરત જ સમજાશો, તેઓને ભૂખ-તરસના દુઃખો, બંધન, પરવશતા વગેરે દુઃખો સહેવા પડે છે. સતત ભયમાં જીવવું પડે છે. શિયાળ જેવા પશુને સિંહ-વાઘનો ડર હોય છે. ગીધ, સમડી અનેક નાના પક્ષીઓનો શિકાર કરે છે. માછલીને માછીમારની જાલમાં



સપડાવું પડે છે. શોખ માટે, circus માટે, જાત-જાતની દવાઓ, સૌંદર્ય પ્રસાધનો માટે, તેમજ માંસાહારીઓ માટે આ પ્રાણીઓનો ભોગ લેવાતો હોય છે. અનેક પ્રકારના દુઃખો, યાતનાઓ અને વેદના ભર્યું એમનું જીવન હોય છે

કપટ કરનારા, અસત્ય બોલનારા, ખોટા કાર્યો કરનારા અધર્મી લોકો મૃત્યુ પામીને તિર્યંચ ગતિમાં જાય છે.

नरकगति :

अहींया फक्त दुःख, दुःख अने दुःख ज छे. ते पण भयंकर कक्षाना दुःख छे. अतिशय गरमी, अतिशय ठंडी, मार खावो पडे, त्रास सहेवो पडे, खूब लांबा समय सुधी दुःख सहन करवा पडे. सांभळता कंपारी छूटी जाय एवा दुःखो नरक गतिमां होय छे.



जेनामां दया भाव के करुणा न होय, अन्यने पीडा आपवामां आनंद आवतो होय, जे अति स्वार्थी होय, लोभी होय, क्रोधी होय, क्रूर होय, हिंसक होय, खूब पापो कर्या होय, तेवा जीवोने नरक गतिमां जवुं पडे छे.

चारेय गति विषे जाणीए त्यारे एटलुं तो स्पष्ट पणे समजाय छे के संसारमां दुःख वधारे अने सुख ओछुं छे. तेमां अशुभ गतिमां तो खूब दुःख छे.

जीव आ चार गतिमां भ्रमण कर्या करे छे. करवुं ज पडे छे. आजे अहीं तो काले त्यां कशुंज permanent नथी.

स्वाभाविक ज प्रश्न थाय, मनमां सवाल ऊठे, आवुं भवभ्रमण कयां सुधी? शुं आनो कोइ अंत जनथी?

जवाब छे – हा! आनो अंत छे. ए पंचम गति जेने मोक्षगति कहेवाय छे.



मोक्षगति :

जन्म-मरणना चक्रमांथी मुक्ति अपावे छे मोक्ष गति.

ज्यां फक्त सुख ज सुख छे, जन्म नथी तो देह नथी, देह नथी एटले एने related कोइ दुःख नथी.

जीवने ज्यारे संसारनी अनित्यतानो बोध थाय छे, त्यारे नाशवंत संसारनो त्याग करी, प्रभुनी आज्ञा मुजब प्रभुना पंथे चालवाना तेने भाव थाय छे. पछी जीव

संयम ग्रहण करी, सर्व कर्मोनो नाश करी मोक्ष गतिने प्राप्त करे छे.

दरेक जीवात्मा चारेय गतिमां शुभ-अशुभ कर्मो प्रमाणे आवन-जावन करे छे, परंतु दरेक जीवना पोताना कर्मो प्रमाणे सुख दुःखनी मात्रामां फरक होय छे.

जे जीव पुण्यवान होय, धर्मना रंगे रंगायेल होय, धर्म आराधक होय, तप-जप-साधना करतां होय, संयम ग्रहण करेल होय, देव-गुरु-धर्ममां द्रढ श्रद्धा धरावनार होय, सम्यक्त्वने पामेलां होय तेवा उत्तम जीवात्मा कोइपण गतिमां जाय छे, तो त्यां पण पूर्व भवनी आराधनाना प्रतापे धर्म पामे छे. कारण के, चारेय गतिमां आपणी साथे आवे छे, धर्म अने धर्मना संस्कार!

देवगतिमां सुख पारावार छे. फूलनी शश्यामां ज जन्म थाय छे. जन्मनुं दुःख नहीं, रोग नहीं, घडपण नहीं, पैसा कमाववानी के परिवारनी चिंता नहीं, पुण्य एवुं जोरदार के मनमां इच्छा थाय अने पूर्ण थइ जाय. परंतु, देवो एक नानकडो नियम पण लइ शके नहीं त्याग करी शके नहीं, दान करी शके नहीं, ब्रत धारण करी शके नहीं, फक्त पुण्यने भोगवे छे, स्वर्गना अपरंपार सुखोमां आसक्त थइ जाय छे अने अशुभ कर्मो बांधे छे.

परंतु, अमुक उच्च गुणवान आत्माओ, समकिती आत्माओ, भाविना तीर्थकर भगवानना आत्माओ... आटलां बधां सुखो वच्चे अलिस्त भावे रहे छे. आसक्त थयां विना परमात्मानी भक्ति करे छे अने आयुष्य पूर्ण थतां उच्च कूळमां जन्म ले छे.

तिर्यच गतिमां ज्ञान नथी, समजण नथी, जे जातिमां जन्म थाय छे, ते स्वभावगत दोषो आवी जाय छे. सिंह-वाघ स्वभावथी ज क्रूर होय छे.

अहींया पण कोईक उच्च आत्माओ जन्म ले छे. गत जन्मना धर्मना संस्कार लइने आव्यां होय छे. कोइने जातिस्मरण ज्ञान थाय छे. निमित्त मळतां ज धर्म आराधना करे छे. घणां सामायिक करे छे. तिर्यच पंचेन्द्रिय 11 ब्रत ग्रहण करी शके छे.

नंद मणियारनो जीव आसकितने कारणे देडको बने छे. वावना देडकाने

जातिस्मरण ज्ञान थतां संथारो ग्रहण करे छे अने देवगतिमां जन्म ले छे. मेघकुमार पूर्व भवमां हाथी, जंगलमां प्राणीओने दावानळथी बचाववा मांडलु रचे छे. ससलांने बचाववा त्रण दिवस सुधी पग एमने एम ऊंचो राखे छे, मृत्यु पामी उच्चकूळमां जन्म ले छे. आवाधणा दाखलाओ आगममां मळे छे.

नरक गतिमां अतिशय दुःख अने वेदनाने कारणे जीवो नवा कर्मो बांधे छे. परंतु अहंर्या पण समकिती आत्माओ पूर्वे करेलां धर्मना प्रतापे दुःखोनी वच्चे समभावमां रहे छे. श्रद्धानी ज्योत झळहळती राखे छे. श्रेणिक राजा अत्यारे नरकमां छे, समभावमां रही कर्मो खपावे छे.

हवे, वात करीए मनुष्य गतिनी, भगवाने जेने दुर्लभ कहेल छे ते मानव भवनी!

चार गतिमां सौथी श्रेष्ठ छे मनुष्य गति-मानव भव. परमात्माए मानव जन्मने दुर्लभ कहेल छे. मनुष्य गतिमां देव-गुरु अने धर्मनुं शरण मळे छे. आ एक ज समजणनो भव छे. मनुष्य चाहे तेटली धर्म, आराधना, साधना, तप, जप, त्याग करी शके छे. फक्त ने फक्त मनुष्य भवमां ज चारित्र ग्रहण करी शकाय छे अने मनुष्य भवमांथी ज मोक्ष गतिने प्राप्त करी शकाय छे. माटे मनुष्य भवनी महत्ता छे.

आपणी मंडिल, आपणुं ध्येय, आपणुं लक्ष्य एक ज होवुं जोईए मुक्ति, मोक्ष!

हृदयना शुभ भावो साथे द्रढ संकल्प करीए. पाप कार्यो अने पाप कर्मोथी विरमीए. जिनवाणी श्रवण करीए, सर्व जीवो प्रत्ये मैत्रीभाव राखीए. सद् गुरुना शरणमां रहीए. शुभ कर्मो करीए, साची दिशामां पुरुषार्थ आदरीए, आत्म शुद्धि करीए, संयम लेवाना भाव राखीए, जीवननी पळ-पळने सार्थक करीए, मुक्तिना मार्गे प्रयाण करीए.

हे प्रभु !

मारामां उत्कृष्ट कक्षानो संवेगभाव अने निर्वेदभाव प्रगट थाय.

एवी आप पासे प्रार्थना करु छुं

નવ તત્ત્વના નામ તથા સમજણ

અનંત જ્ઞાની... અનંત ઉપકારી શ્રી ભગવંતે આત્માને વિશુદ્ધ બનાવવા માટે નવ તત્ત્વનું જ્ઞાન કહ્યું છે. નવ તત્ત્વનું જાણપણું પ્રાસ થવાથી, શું કરવા જેવું છે, શું છોડવા જેવું છે, શું કરવાથી આપણો આત્મા આ સંસાર સાગરથી પાર ઉતરી સિદ્ધ, બુદ્ધ અને મુક્ત બની શકે છે... વગેરે બધું જ આપણને સમજાઇ જાય છે. સમજણ પ્રાસ થવાથી આપણે એ માગને સ્વીકારીએ છીએ, એ પ્રમાણે આચરણ કરીએ છીએં. 9 તત્વોની સમ્યક્ સમજ અને શ્રદ્ધા સમક્ષિની પ્રાસિ કરાવે છે.

દેવાનુપ્રિય ! આવો આપણે જાણીએ આવા અમૂલ્ય નવ તત્ત્વને, પરમ સત્યને...
પરમ કલ્યાણકારી માગને!

નવ તત્ત્વના નામ

- | | | |
|-----------------|-----------------|-------------------|
| 1. જીવ તત્ત્વ | 4. પાપ તત્ત્વ | 7. નિર્જરા તત્ત્વ |
| 2. અજીવ તત્ત્વ | 5. આશ્રવ તત્ત્વ | 8. બંધ તત્ત્વ |
| 3. પુણ્ય તત્ત્વ | 6. સંવર તત્ત્વ | 9. મોક્ષ તત્ત્વ |

નવ તત્ત્વની સમજણ

- જીવ તત્ત્વ** - જેનામાં ચૈતન્ય હોય, સુખ દુઃখની જાણ હોય, સુખ દુઃખનું વેદન હોય. જ્ઞાન ગુણ હોય તથા જે આપણે સ્વયં પોતે છીએ પણ અરૂપી હોવાથી જેને આપણે જોડિ શકતાં નથી, તેને જીવ તત્ત્વ કહેવાય.
- અજીવ તત્ત્વ** - જે જડ હોય, જેને સુખ-દુઃખ વગેરેની કોઈ અનુભૂતિ ન હોય, જેને આપણે કદાચ જોડિ શકીએ, કદાચ ન જોડિ શકીએ તે અજીવ તત્ત્વ કહેવાય.
- પુણ્ય તત્ત્વ** - જે કાર્યના ફલ સ્વરૂપે ભौતિક સુખ મળે તેને પુણ્ય તત્ત્વ કહેવાય. પુણ્ય તત્ત્વ અનુકૂળ વાયુ સમાન છે.

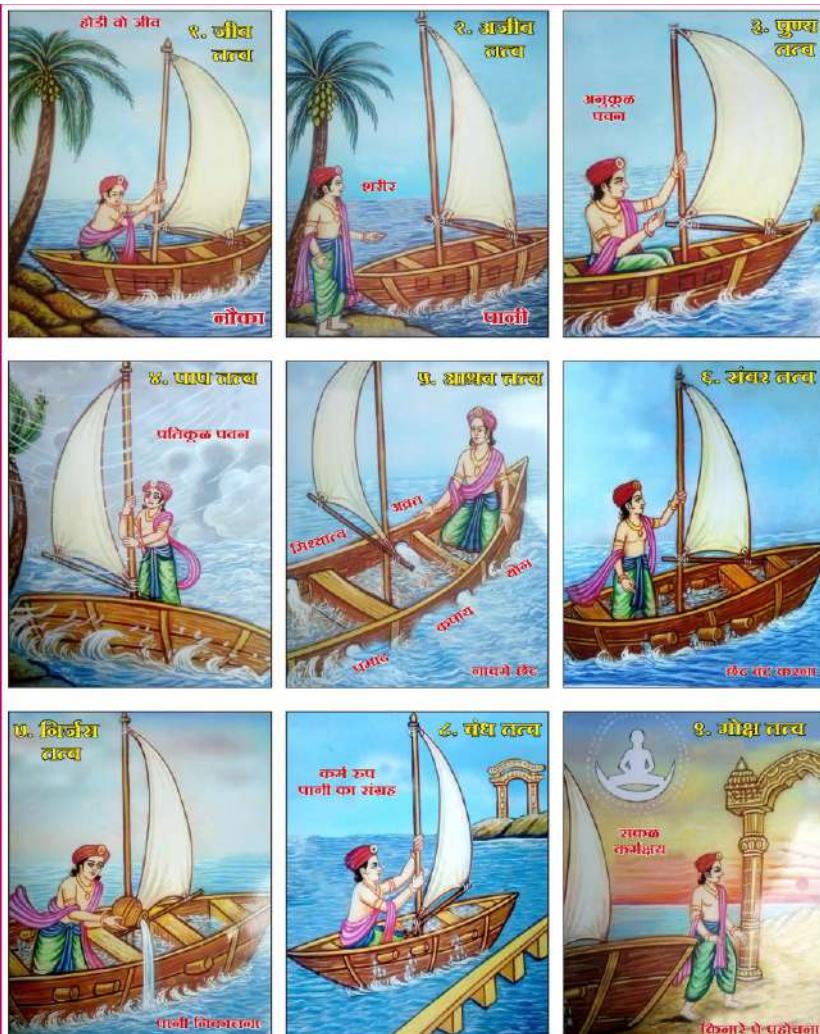
- **पाप तत्त्व** - जे कार्यना फल स्वरूपे भौतिक दःख मળे તેને પाप તત्त्व કહેવાય. પાપ તત્ત્વ પ્રતિકૂળ વાયુ સમાન છે.
- **આશ્રવ તત્ત્વ** - જે કાર્ય કરવાથી કર્મરૂપી જળનો પ્રવાહ આપણા આત્મ સરોવરમાં આવે તેને આશ્રવ તત્ત્વ કહેવાય. આશ્રવ તત્ત્વ ખુલ્લી બારી સમાન છે. જેમ બારી (window) ખુલ્લી હોય તો ઘરમાં ધૂલ આવે તેમ આશ્રવ તત્ત્વ આત્મ ઘરમાં કર્મરૂપી ધૂલ લાવે છે.
- **સંવર તત્ત્વ** - વ્રત નિયમ આદિ દ્વારા કર્મો રૂપી જળના પ્રવાહને આત્મ સરોવરમાં આવતો રોકી દેવો તે સંવર તત્ત્વ કહેવાય. સંવર તત્ત્વ બંધ બારી સમાન છે. બારી બંધ હોય તો ઘરમાં ધૂલ ન આવે તેમ સંવર તત્ત્વ આત્મ ઘરમાં કર્મરૂપી ધૂલ આવવાન દે.
- **નિર્જરા તત્ત્વ** - આત્મા સાથે એકમેક થયેલાં કર્મોનો બાર પ્રકારના તપ દ્વારા ક્ષય કરવો તે નિર્જરા તત્ત્વ કહેવાય. (ઉપવાસ, એકાસના કરવા, વિનય કરવો, નમન કરવું, જય જિનેન્દ્ર બોલવું વગેરે)
- **બંધ તત્ત્વ** - કર્મરૂપી જળનો પ્રવાહ આત્મરૂપી સરોવરમાં દૂધ અને પાણીની જેમ એકમેક થિડ જાય. આત્મા સાથે કર્મોનો બંધ થિડ જવો તે બંધ તત્ત્વ કહેવાય.
- **મોક્ષ તત્ત્વ** - કર્મોથી મુક્ત થિડ જવું, સંપૂર્ણ કર્મોનો ક્ષય થિડ જતાં જીવ અજર અમર સ્થિતિને પ્રાપ્ત કરે છે, તેને મોક્ષ તત્ત્વ કહેવાય.

આ નવ તત્ત્વમાં જાણવા જેવા બધાં જ તત્ત્વ છે. પાપ, આશ્રવ, બંધ તત્ત્વ છોડવા જેવા છે અને પુણ્ય, સંવર, નિર્જરા તત્ત્વ આચરવા જેવા છે. જો આપણે આમ કરીશું તો મોક્ષ તત્ત્વ અવશ્ય પામી લેશું.

મોક્ષની પ્રાપ્તિ શા માટે ?

- કર્મથી મુક્ત શુદ્ધ વિશુદ્ધ મારું સાચુસ્વરૂપ છે, તે માટે,
- સર્વ દુઃખોથી છૂટવા માટે.
- મારા દ્વારા કોઈ જીવની હિંસા ન થાય, તે માટે.

આવો, નૌકાના દ્રષ્ટાંતરી નવ તત્ત્વને જાણીએ.





जैन धर्म सौथी श्रेष्ठ

विश्वना सर्व धर्ममां जैन धर्म सौथी श्रेष्ठ छे.

शा माटे ?

आपणो जन्म जैन परिवारमां थयो छे, माटे ?

ना ! परंतु...

1. केवळज्ञानी - जेओ भूत, वर्तमान अने भविष्यने संपूर्ण रीते जाणे छे एवा भगवंतो द्वारा कहेवायेलो छे, तेथी ते संपूर्ण सत्य छे.
2. जैन धर्म 'जीवो अने जीववा दो' एम कहे छे. जैन धर्मना पालनमां जगतना तमाम जीवोनुं कल्याण थाय छे.
3. पाप कर्म अने पुण्य कर्म कड रीते बंधाय तेनुं विस्तारपूर्वक वर्णन जैन धर्ममां ज मळे छे.
4. भगवान सुख-दुःख आपतां नथी, आपणा कर्मो प्रमाणे आपणने बधुं मळे छे, तेवो कर्मनो सिद्धांत समजाव्यो छे. जैन धर्म न्याययुक्त छे.
5. जैन धर्मनुं पालन कोइ पण व्यक्ति करी शके छे.
6. जैन food सौथी ओछी हिंसा द्वारा तैयार थाय छे.
7. जेवुं आपशो तेवुं ज मळशो... ते जैन धर्म समजावे छे.
8. जैन धर्ममां त्यागने विशेष महत्त्व आप्युं छे.
9. पापथी बचवा माटे घणां नियमो जैन धर्ममां बताव्यां छे.
10. बधां जीवो प्रत्ये मैत्री राखवानुं जैन धर्म शीखवाडे छे.
11. सूक्ष्ममां सूक्ष्म जीवोनी जतनानी समज आपे छे.
12. सौथी मुख्य... आपणे पण भगवान बनी शकीए तेवुं फक्त जैन धर्ममां ज बताव्युं छे.

आपणा उत्कृष्ट पुण्यनो उदय छे के, श्रेष्ठ एवो जैन धर्म आपणने मळयो छे. जैन धर्मना सिद्धांतो प्रमाणे आपणी वाणी, वर्तन अने व्यवहार राखी, स्वना आत्मानुं कल्याण साधी लेवुं जोइए.

आत्म विचारणा

तमने कोई पूछे के - who are you? तमे कोण छो ?

तो तमे शुं कहो ? तमे एमज कहोने - I am Ritesh.

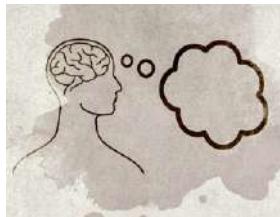
हुं रीतेश छुं, मारुं नाम रीतेश छे.

परंतु तमारो आ उत्तर right छे के wrong?

Right नथी. कारण के, रीतेश के रीतेश नाम permanent नथी. ज्यारे आपणो जन्म थयो त्यारे ते शरीरने मम्मी-पप्पा ए रीतेश नाम आप्युं अने ज्यारे मृत्युं थशे त्यारे शरीर पडयुं रहेशे अने तेमां रहेलो शक्ति स्वरूप आत्मा चाल्यो जशे. लोको ते शरीरने बाळी नांखशे. थोडा समयमां लोको रीतेश नाम भूली जशे एटले हुं शरीर तो नथी ज. बराबरने ! तो पछी हुं कोण छुं ?

हुं शरीर भिन्न चैतन्य स्वरूप आत्मा छुं.

ज्ञान अने दर्शन मारा गुण छे.



हुं कोण छुं?

तमने क्यारेय पण आवो प्रश्न थयो छे?

हुं शरीर छुं? के हुं शरीरथी भिन्न आत्मा छुं?

अनंत काळथी देह अने आत्मा साथे ज छे. माटे आपणे 'देह ते हुं' एम मानी लीधुं छे. कारण के, आत्माने पांच ईन्द्रियोथी जोई शकातो नथी अने जे जोई छीए ते देह (शरीर) छे.

अनंत काळथी मने मारी साची ओळखाण ज नथी थई.

ज्यारे ओळखाण ज खोटी छे, तो पछी आज सुधी जे कर्युं ते बधुं ज देह (शरीर)ने ध्यानमां राखीने कर्युं.

आज सुधी बधो पुरुषार्थ अवळो कर्यो.

हुं आत्मा छुं, हुं देहथी जुदो एवो आत्मा छुं.

एवी ज्यारे मने मारी साची ओळखाण थाय छे, त्यार पछी ज लक्ष्य नक्की थाय छे अने पछी सत्‌पुरुषार्थ प्रारंभ थाय छे ते लक्ष्यने पामवानो. ते माटे आत्माने ओळखवो जरूरी छे.

आत्मा केवो होय? आत्माना गुणो क्या छे?

केवी रीते आत्माने अनुभवी शकाय?

तो आवो जाणीए आत्मा विषे...

आत्मा चैतन्य स्वरूप छे, जड नथी. जेमां जोवा अने जाणवानी शक्ति छे, ते आत्मा छे. जेमां संवेदन छे, ते आत्मा छे. आत्मा ज्ञान अने दर्शन युक्त छे. आत्मा अनादि काळथी छे. ज्यारथी समय छे त्यारथी आत्मा छे. आत्मा सदा हतो, छे अने सदा रहेशे.

- आत्मा अरूपी छे
- आत्माने कोई आकार (shape) नथी.
- आत्माने कोई रंग (colour) नथी.
- आत्माने कोई गंध (smell) नथी.
- आत्माने कोई स्वाद (taste) नथी.
- दरेक जीवनो आत्मा एक सरखो छे.
- आत्मानो गुण संकोचन अने विस्तार पामवानो छे.
- कीडीनुं शरीर होय तो आत्मप्रदेश संकोचन पामी कीडीना शरीरमां समाई जाय.
- हाथीनुं शरीर होय तो आत्मप्रदेश विस्तार पामी तेना शरीरमां समाई जाय.

एक शरीरमां केटला आत्मा रहे?

एक शरीरमां एक आत्मा पण रही शके. दा.त. मनुष्यनो आत्मा

एक शरीरमां अनंत आत्मा पण रही शके. दा.त. बटेटा, डुंगळी वगेरे.

वृक्ष, वनस्पति, डाळीओ, पान, फूल, फळ वगैरेमां संख्याता अथवा असंख्याता जीव होय पण ते दरेक जीवनुं शरीर अलग - अलग होय छे.

आत्मा शरीरना दरेक भागमां व्याप होय.

दा.त. जेम पाणीमां साकर नांखीए तो पाणीना दरेक टीपामां साकर भळी जाय

तेम आत्मा शरीरना दरेक भागमां व्याप्त होय.

आत्माने इन्द्रियो वडे जोई शकातो नथी. जेम हवाने, electricity ने जोई शकाती नथी. मात्र अनुभवी शकाय छे. तेवी ज रीते आत्माने पण पांच इन्द्रियो वडे जोई शकातो नथी.

आत्माने आत्माथी जाणी शकाय छे. एटले के, केवळज्ञान प्राप्त थयां बाद ज जाणी शकाय.

छ बोल - आत्माना स्वरूपने छ बोल द्वारा जाणीए.

- (1) आत्मा छे.
- (2) आत्मा नित्य छे.
- (3) आत्मा कर्मनो कर्ता छे.
- (4) आत्मा कर्मनो भोक्ता छे.
- (5) मोक्ष छे.
- (6) मोक्षना उपाय छे.

आ छ बोल पर श्रद्धा करवाथी अने कर्म क्षयनो... मोक्ष प्राप्तिनो पुरुषार्थ करवाथी मोक्षनी प्राप्ति थई शके छे.

आत्मा ज्यारे कर्मोथी युक्त होय छे त्यां सुधी ते देह धारण करे छे. ज्यारे सर्व कर्मोथी मुक्त थाय छे त्यारे ते शुद्ध, बुद्ध अने मुक्त बनी सिद्ध अवस्थामां बिराजे छे एटले के - मोक्षनी प्राप्ति करे छे.

आत्माना अनंत गुण छे.

अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत शक्ति छे.

क्षमा, नम्रता, सरलता, संतोष आदि आत्माना गुणो छे.

आत्माने कोइए बनाव्यो नथी. आत्मा अनादि कालथी छे, हतो अने सदा रहेशे.

आत्मा कोई material (पदार्थ)मांथी बनेलो नथी. आत्मा चैतन्यमय, ज्ञान अने दर्शन युक्त छे.

दरेक जीवनो आत्मा एक सरखो ज छे.

आत्मानो जन्म नथी थतो एटले एनुं मृत्यु पण नथी थतुं, जेनो जन्म थाय तेनुं मृत्यु थाय. आत्मा अविनाशी छे.

जन्मदिवस

जन्मदिवस - Birthday!!

खुश थवानो दिवस? के खुश करवानो दिवस?

आ छे - खुश करीने खुश थवानो दिवस! खुशी फेलावीने खुश थवानो दिवस! चालो समजीए... कइरीते??

Jain way of Birthday celebration. आम जोइए तो जन्मदिवस एटले आपणा आ सुंदर एवा मनुष्य जीवनमांथी हजी एक वर्ष ओळुं थयुं. एटले के सारा कार्य (good deeds) करी, good karmas ने bind करी good luck ने वधारवानुं एक वर्ष ओळुं थइ गयुं. एटले birthday ना दिवसे शक्य एटलां वधारे good deeds करी आपणी पुण्यनी bank मां वधारे पुण्य जमा करावी लेवुं जोइए.

एना माटे शुं-शुं करी शकाय ?

कोइपण शुभ दिवसनी शरूआत माता-पिताना आशीर्वादथी अने देव, गुरुना दर्शनथी थाय तो सर्वश्रेष्ठ दिवस बनी रहे छे. माटे दिवसनी शरूआत parents ने पगे लागी, परमात्मा अने गुरुना दर्शनथी करवी.

Friends साथे outing, picnics and parties तो घणीवार करीए ज छीए, तो आ दिवसे friends साथे जरूरतमंद बाळको पासे जइ, एमने जरूरियातनो सामान donate करी, एमनी साथे quality time spend करी, एमना face पर smile लाववानो प्रयत्न करवो जोइए. एमना चहेरानी smile जोइने तमारा face पर पण एक मोटी smile तो आवशे ज, पण साथे-साथे तमारुं heart पण एक अनन्य satisfaction feel करशे.

Cake के जे मेंदो, चोकलेट, cheese, जेवा unhealthy ingredients थी बनती होय छे, एने cut करवाने बदले आपणे सुखडी जे एकदम healthy ingredients थी बने छे, जे आपणी health माटे पण एकदम best होय एने cut करवी जोइए.

Candlesने burn करीने blow करवाथी केटलांय अग्निकायना अने वायुकायना जीवोनी हिंसा थाय छे, जेनाथी पाप कर्म बंधाय छे. तो candles ने blow न करतां आपणे ए दिवसे hungry ने food, thirsty ने water/chhas, poor studentने books/fees, doggi ने biscuits, cows ने grass, कबूतरने चण आपवा जेवा good deeds करीने एमना जीवनमां पण खुशीनो नानो दीप प्रज्वलित (lit a lamp of happiness) करवानो प्रयास करवो जोइए.

Movies, drama, etc. तो आपणे घणीवार जोतां ज होइए छीए. तो आ दिवसे कंइक एवुं करवुं जोइए, जेथी ज्ञान पण मळे अने good luck पण वधे. तो एना माटे करवो जोइए स्वाध्याय, सत् प्रवृत्ति, गुरुनुं प्रवचन सांभळो के पछी कोइ नवी गाथा कंठस्थ करो, के पछी सामायिक करो. आ दिवसे जेटलो समय आपणे सत् प्रवृत्तिमां spend करीए, एटलां आपणा good luck तो strong थाय ज, पण साथे-साथे एक क्यारेय न experience करेली feeling of immense happiness नो अनुभव पण थाय अने आ शुभ दिवसना अंतमां परमात्माने एक प्रार्थना जस्तर करवी.

हे प्रभु! तारो खूब-खूब आभार!
ताराथकीज मने दुर्लभ एवा मनुष्य भवने अने
जन्मथी मळेलां जैन धर्मने सार्थक करवानी समजण मळी छे.



તિથિનું પાલન

એક વર્ષના બાર મહિના હોય છે.

જેમ english calendar માં 1, 2, 3 તારીખ કહેવાય છે, તેમ આપણા ભારત દેશમાં હિંદુ અને જૈન પંચાંગ પ્રમાણે મહિનાના એક-એક દિવસને તિથિ કહેવાય છે. તિથિ પણ તારીખની જેમ રોજ બદલાય છે. જેમ કે, એકમ, બીજ, ત્રીજ એમ તિથિ બદલાય છે. તારીખની ગણતરી સૂર્ય-ભ્રમણ અનુસાર અને તિથિની ગણતરી ચંદ્ર-ભ્રમણ અનુસાર થાય છે.

પર્વ તિથિ :- સામાન્ય રીતે એક મહિનાની 30 તિથિ હોય છે. 15 તિથિ શુકલપક્ષની - સુદની અને 15 તિથિ કૃષણપક્ષની - વદની હોય છે. આ 30 તિથિઓમાં 10 તિથિ પર્વ તિથિ રૂપે ઓળખાય છે. શુકલપક્ષની બીજ, પાંચમ, આઠમ, અગિયારસ અને પક્ખી, આ પાંચ તિથિ અને કૃષણપક્ષની આ પાંચ તિથિ, કુલ 10 તિથિ પર્વ તિથિ છે. ચંદ્રના પ્રકાશની વધ-ઘટનાં આધારે તિથિની ગણતરી થાય છે.



તિથિ પાઠ્વી એટલે શું?

આમ તો હંમેશા સર્વે દિવસો આરાધનામય વ્યતીત કરવા જોઈએ. દરેક પાપનો ત્વાગ કરવો જોઈએ, દરેક પાપથી બચવું જોઈએ. પરંતુ સંસારમાં રહેવાના કારણે રોજ દરેક પાપથી બચી શકાતું નથી એટલે પ્રભુએ કહ્યું - કમ સે કમ આ 10 દિવસ તો બને એટલાં પાપની પ્રવૃત્તિથી બચવું જોઈએ. માટે આ દિવસો દરમ્યાન કંદમૂળ, લીલોતરી

अने शाकभाजीनो त्याग करवो जोईए.
द्रव्यथी के भावथी जीवहिंसा थती होय
तेवी प्रवृत्तिओनो, नाटक, सिनेमा, होटल
वगेरेनो त्याग करवो जोईए. वधु मां वधु
समय धार्मिक प्रवृत्तिमां विताववो जोईए.



- शा माटे आ ज 10 दिवसनी तिथि
पाळवी?

शास्त्रना कथनानुसार ते दिवसोमां

आपणा आवता भवना आयुष्यना बंधनी संभावना होय छे. आयुष्यनो बंध पडे त्यारे आपणे जे भावमां होईए ते प्रमाणे आपणने मनुष्य, देव, तिर्यच के नरकनी गति मळशे ते नक्की थतुं होय छे. माटे जो ते दिवसे आपणे पापनी प्रवृत्ति जेटली ओछी करीशुं, धर्मनी प्रवृत्ति जेटली वधारे करीशुं तेटलां आपणे शुभभावमां रहेशुं अने शुभभावमां जो आयुष्यनो बंध पडे तो आवतां भवनुं सदगतिनुं आयुष्य बंधाय जशे. माटे ते दिवसोमां आपणे धर्माराधना माटे सजाग अने सावधान रही आवता भवनुं planning करी लेवुं जोईए.



अपेक्षित प्रश्नो:-

- (1) तिथि एटले शुं?
- (2) तिथि शेना आधारे नक्की थाय छे?
- (3) महिनाना पहेलां पंदर दिवसने शुं कहेवाय छे?
- (4) शा माटे महिनाना ए ज 10 दिवस तिथि पाळवी जोईए?
- (5) कृष्णपक्षनी केटली तिथि होय छे?



જैનદર્શન ફક્ત એક ધર્મ જ નથી, એ એક જીવન જીવવાની કળા છે. આજથી લગભગ 2600 વર્ષ પહેલાં તીર્થકર પરમાત્મા મહાવીરે આપેલાં અમૂલ્ય બોધને જો આપણે સમજીએ, પૂર્ણ નિષ્ઠાથી નિભાવીએ અને એવી જીવનશૈલીને સ્વીકારીએ તો શાંતિમય અને સંઘર્ષરહિત જીવન જીવી શકીએ.

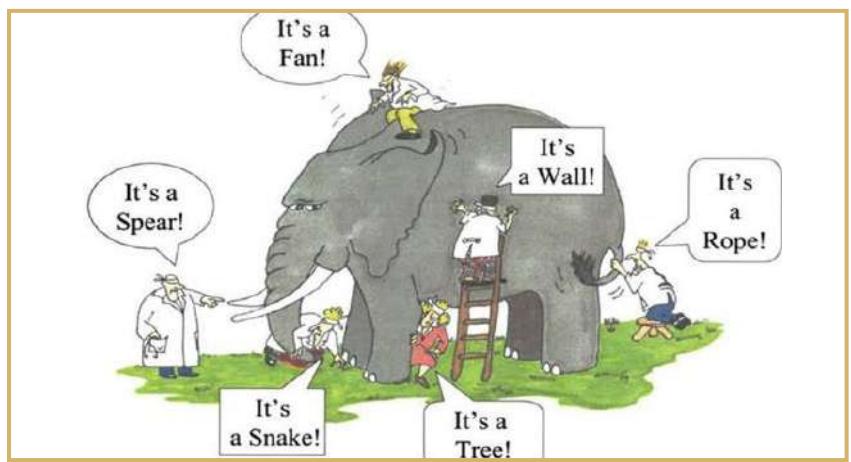
ભગવાન મહાવીરે આપેલાં એ બોધને, એ સિદ્ધાંતોને આજે વિજ્ઞાન પણ સાબિત કરી રહ્યું છે. એમાંથી અમુક આપણે શ્રેણી-1 માં જોયા. બીજા અમુક વિષે હવે જાણીએ.

3 CORE PRINCIPLES OF JAINISM (3A'S)

1. અનેકાંતવાદ:

ધર્મ કહે છે...

પરમાત્મા મહાવીરનો આ સિદ્ધાંત એમ સમજાવે છે કે, કોઈ પણ એક statement અથવા situation ક્યારેય પણ પૂર્ણ રીતે સાચી કે ખોટી ન હોઈ શકે. ભગવાને કોઈ પણ પરિસ્થિતિને જોવા અને સમજવા માટે સાત નય બતાવ્યા છે. નય એટલે દ્રાષ્ટિકોણ. એ પ્રમાણે કોઈ પણ એક statement અથવા situation કોઈ પણ એક પ્રકારના નયથી જોઈએ તો તે સત્ય હોય છે. આગમમાં આ વાતને સમજવા માટે એક સુંદર ઉદાહરણ આપ્યું છે.



अमुक प्रज्ञाचक्षु व्यक्तिओने एक हाथी पासे लई जवामां आवे छे अने पूछवामां आवे छे के आ हाथी केवो छे ? त्यारे जेणे हाथीना पग पकड्या हता एणे कह्युं के, हाथी एक स्तंभ जेवो मोटो छे. जेणे पूँछडी पकडी हती तेणे कह्युं के, हाथी तो रस्सी जेवो छे. जेणे हाथीना कान पकडया हता तेणे कह्युं के, हाथी एक सुपडां जेवो छे. आ रीते बधांए पोतपोताना हिसाबे हाथीनुं वर्णन कर्यु. पण आमांथी कोई पण पूर्ण रीते साचां न हता अने पूर्ण रीते खोटां पण न हता. तेथी जो बधांना मतनो स्वीकार करीए तो हाथीनुं स्वरूप जाणी शकाय.

शरीर विज्ञाननी द्रष्टीथी जोईए तो...

कोई एक दवा कोई एक दर्दी माटे फायदाकारक होय छे, पण ए ज दवा बीजा माटे नुकसानकारक पण होई शके छे.

जेम के, blood pressure नी दवा blood pressure ना दर्दी माटे फायदाकारक होय छे, पण ए ज दवा एक स्वस्थ व्यक्तिने आपवामां आवे तो तेनां blood pressure ने down करी शके छे.

Diabetes वाळी व्यक्ति माटे साकर नुकसानकर्ता छे, तो normal व्यक्ति माटे साकर शक्तिदायक छे.

क्षेत्र विज्ञाननी द्रष्टीथी जोईए तो...

पृथ्वीनी पूर्व दिशामां रहेतां लोको माटे जो दिवस होय तो ए ज समये पश्चिम

दिशामां रहेतां लोको माटे त्यां रात होय छे. पूर्व दिशामां रहेती व्यक्ति एम कहे के, हमणां दिवस छे अने पश्चिमां रहेती व्यक्ति एम कहे के, हमणां रात छे. तो बन्ने पोत-पोतानी जग्याए साचा छे.

आज प्रमाणे दरेक क्षेत्र, व्यक्ति अने वातावरण प्रमाणे त्यांना परिवेशो, आहार पद्धति, रूढिओ वगैरे set थती होय छे.

मनोविज्ञानी द्रष्टिथी...

दरेक व्यक्तिना विचारो भिन्न होय छे. विचार भेदना कारणे प्रायः संघर्ष थतां होय छे, परंतु परस्परना विचारनो स्वीकार थाय तो संघर्षनुं समाधान थई जाय.

आ बधां विज्ञानो अनेकांतवादना सिद्धांतने ज प्रस्थापित करे छे. अनेकांतवाद जीव मात्रनी विचारधाराने स्वीकार करवानी कळा शीखवे छे. सर्व जीवो साथे मंगल मैत्रीनो संदेश आपे छे. शांतिनुं सर्जन करे छे.

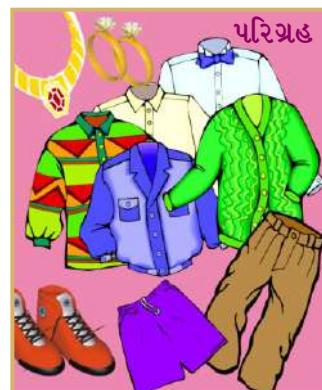
2. अपरिग्रह:

धर्म कहे छे...

आ सिद्धांत आपणने आपणी जरूरियात अने ईच्छाओ पर संतुलन करवानुं अने कोई पण वस्तु के व्यक्ति प्रत्ये ममत्वभाव न राखवानो बोध आपे छे.

अपरिग्रहनो अर्थ छे- जेटली आपणने जरूर छे एटलुं ज आपणी पासे राखी, बाकीनुं अन्य जीवो माटे त्याग करी दईए. जेथी बधां पोतानी जरूरियातने पूरी करी शके. तेमज वधु जमा करवानी वृत्ति हंमेशा आपणने पाप प्रवृत्ति माटे प्रेरित करती होय छे.

आपणे क्योरेक न करवा जेवी हिंसा, असत्य, चोरी जेवा काम करी पाप कर्मनो बंध करी लईए छीए.



વिज्ञान कहे छे...

विज्ञान पण global warning ना उदाहरण द्वारा आपणने आ ज समजावे छे के, आपणे आपणा शोख माटे, luxury माटे, व्यर्थनी ईच्छापूर्ति माटे, मोटे भागे चालतां विविध प्रकारना उत्पादनोना कारखानाओ, factory ओ वगेरे पार वगरनुं प्रदुषण वधारे छे. Air conditioner, cars वगेरेना वपराशने लीधे वातावरणमां carbon dioxide नुं प्रमाण एटलुं वधी जाय छे के, जे जीवोना जीवन माटे बहु नुकसानकारक होय छे.

अनेक हेतुओथी कापवामां आवतां जंगलोना कारणे पण oxygen supply ओछी थई जाय छे अने carbon dioxide वधतो जाय छे. अने कुदरती साधनो जेम के, पाणी, खनीज तत्त्वो, electricity आदिनो बेफाम उपयोग करवाथी एक दिवस एवो आवशे के, आ बधी वस्तुओनी अछत थई जशे. एटले विज्ञान पण आपणने वस्तुओनो जरूर अनुसार ज वपराश करवा कहे छे.



3. अहिंसा-

धर्म कहे छे...

भगवान महावीरे कह्युं छे, सब्बजीवाप्पभूयस्स. एटले बधां जीवो मारा जेवा छे. बधां जीवो एवी ज रीते सुख अने दुःखनो अनुभव करे छे, जेवी रीते मारो जीव करे छे. तेथी आपणे दरेक जीव प्रत्ये अनुकंपानो भाव राखी वधु ने वधु अहिंसानुं

पालन करीने जीवन जीववुं जोईए. आ थई द्रव्य हिंसानी वात.

भगवाने कह्युं छे के, आपणे कोई पण जीवने भावथी पण दुःखी न करवा जोईए. कोईने कडवा वचन कहेवा, कोईना विषे खराब विचार करवो, कोई पण प्रकारे तेना मनने दुभववुं. आ बधी प्रवृत्ति भाव हिंसा कहेवाय छे.

परमात्माए भाव हिंसामां द्रव्य हिंसाथी वधारे पाप बताव्युं छे. आपणुं जीवन द्रव्यथी अने भावथी अहिंसामय होवु जोईए जेथी जीवोने तो अभयदान मल्ले ज, साथे-साथे आपणा पाप कर्मोनो ओछामां ओछो बंध थाय.

विज्ञान कहे छे :

कहेवाय छे के, जेवुं अन्न तेवुं मन. ज्यारे आपणे कोई पण पंचेन्द्रिय जीवने मारीने भोजन लईए छीए अथवा कोई एवा पदार्थनो उपयोग करीए छीए. (make up kits, perfumes, leather purses वगैरे) जेने बनाववा माटे निर्दोष अने मासूम जीवोने खूब पीडा आपवामां आवे छे अने ते जीवोनुं मृत्युं पण थई जाय छे. ए समये जीवोना मुखमांथी निकळती चीसो, तेमना आंसुं, तेमनो डर... ए बधां भावो ए पदार्थ साथे जोडाई जाय छे अने ए पदार्थ आपणे ज्यारे ग्रहण करीए छीए त्यारे ए बधां भावोनी असर आपणी उपर पण थाय छे. आवी द्रव्य हिंसाना कारणे आपणुं मन पण व्याकुळ, बेचेन अने हिंसक बनी जाय छे.

ज्यारे आपणे कोईना उपर गुस्सो करीए छीए अथवा कोईने खराब कहीए छीए त्यारे ए व्यक्तिनी गेरहाजरीमां पण आपणे ए ज वातनो विचार करतां रहीए छीए.

आवी भाव हिंसाना कारणे ज्यारे आपणे कोई negative विचार करीए त्यारे ते image नो गुणाकार थया करे छे अने ते आपणा मगजनी अंदरना cells ने नुकसान करे छे, जे अंतमां cancer जेवी घातक बीमारीनुं कारण पण बनी शके छे.

There is no end to mad race of weapons. There are number of

weapons superior to each other, but nothing is superior than ahimsa- non violence.

वर्तमाने चारे बाजु स्वार्थनी रमत चाले छे. पोतानी स्वार्थसिद्धि माटे व्यक्तिने क्रूर प्रवृत्ति करतां पण संकोच थतो नथी. आ परिस्थितिमां प्रभु महावीरना आ त्रणे सिद्धांतो विश्वशांतिनुं वातावरण सर्जी शके छे.



जिन
शासन
का हो
जायफारा,
हमें लगे
प्राणों से
ट्यारा...





मरीचि

आपणा 24 मां तीर्थकर परमात्मा महावीर स्वामीनो प्रथम भव नयसार सुथारनो, बीजो भव देवलोकनो, त्रीजो भव आ भरतक्षेत्रनी विनीता नगरीमां, प्रथम तीर्थकर प्रभु कृष्णभद्रेवना पुत्र, भरत चक्रवर्तीने त्यां मरीचि तरीके थयो. ते बाळकना शरीरमांथी मरीचि एटले के किरणोनी जेम प्रकाश फेलातो हतो माटे तेनुं नाम मरीचि राखवामां आव्युं. तेओ युवान थयां त्यारे प्रभुना वचनथी वैराग्य जाग्यो अने प्रभु कृष्णभद्रेव पासे दीक्षा अंगीकार करी.

दीक्षा लइने तेओ पांच समिति अने त्रण गुप्तीनुं पालन करतां 11 अंगनो अभ्यास करी प्रभु साथे रहां.

एक दिवस उनाळाना धगधगता तापनी पीडा मरीचिथी सहन थइ नहीं अने तेणे विचार्यु के आ संयमने, आ साधुपणाना गुणोने, हुं लांबा समय सुधी टकावी राखवा समर्थ नथी अने मारा घरे पण जड शकुं तेम नथी कारण के, जो हुं आवुं करीश तो लोकोमां मारी निंदा थशे. आवुं विचारी तेमणे त्रिदंडीपणाना नवा वेशनी कल्पना करी.

प्रभुना मार्ग पर टकी रहेवुं सहेलुं नथी, पण जेनुं मनोबळ द्रढ होय, जेने सत्य समजाइ गयुं होय, जे प्रभुने प्रेम करतो होय, तेना माटे कठिन पण नथी, ते जीवनपर्यंत श्रद्धाथी टकी शकेछे.

परिषहोमां पण जे प्रसन्न रहेते साचा संयमी होय छे.

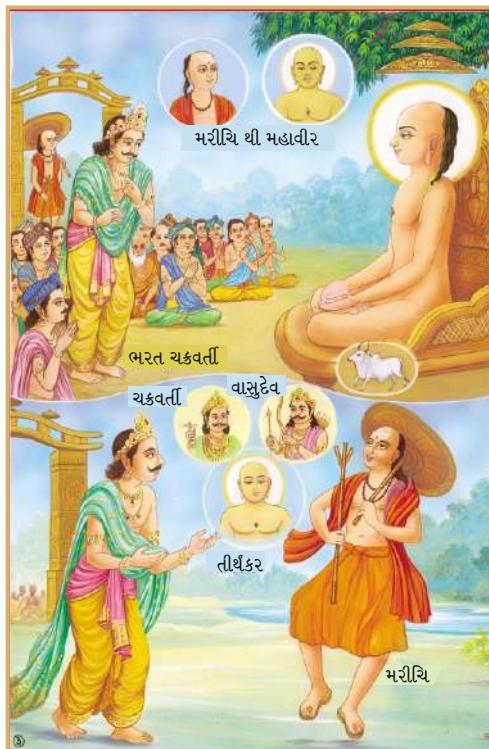
परमात्माना संयमी साधु मन, वचन अने काया आ त्रण दंडोना जीतनार होय छे. ज्यारे मरीचि पोते स्वयं त्रण दंडथी जीतायेला हतां. माटे “त्रिदंडीनुं लांछन” हो एवो विचार करीने तेमणे मस्तक उपर छत्र धारण कर्यु. पगमां उपानह एटले के चाखडी पहेरी अने श्वेत वस्त्र ने बदले भगवा वस्त्र धारण करी, हाथमां दंड राख्यो.

त्रिदंडीनो वेश धारण करवा छतां मरीचि हंमेशा शुद्ध धर्मनी प्ररूपणा करतां। पोताथी प्रतिबोध पामेलां अनेक राजकुमारोने ते जिनेश्वर परमात्मा पासे मोकलतां अने कहेतां के साचो धर्म तो प्रभु पासे ज छे. माराथी ते नियमो, पांच महाव्रत पाळी शकाया नहीं अने हुं तेनुं आचरण करी शकतो नस्थी माटे अहं छुं, बाकी धर्म तो त्यां ज छे.

एक वर्खत प्रभु विनीता नगरीमां पधार्या. मरीचि पण प्रभुनी साथे ज विचरता हतां. प्रभुने वंदन करवा आवेलां भरत चक्रवर्ती ए प्रभुने पूछ्युं के, “अहंया कोइ मनुष्य छे जे आ अवसर्पिणीमां तीर्थकर थवाना होय?” त्यारे परमात्माए कह्युं के, “हे राजन, तमारो आ पुत्र मरीचि महावीर नामे 24मां तीर्थकर थशे. महाविदेह क्षेत्रमां प्रियमित्र नामे चक्रवर्ती थशे अने आ भरतक्षेत्रमां प्रथम वासुदेव थशे.”

आ सांभळी भरत चक्रवर्तीए मरीचि पासे जइने अंजली जोडी नमस्कार करीने कह्युं, “हे मरीचि! तमे अंतिम तीर्थकर, चक्रवर्ती अने आ अवसर्पिणीना प्रथम वासुदेव थशे. तमारा आ त्रिदंडीपणाने के चक्रवर्तीपणाने अथवा तो वासुदेवपणाने नमस्कार करतो नस्थी, परंतु तमे तीर्थकर थवाना छोते तमारा आत्मतत्त्वना गुणोने बे हाथ जोडीने वंदन करुं छुं.” आ प्रमाणे वंदन करी तेओ विनीता नगरीमां गयां.

देवानुप्रिय! हंमेशा एक वात याद राखवी, कोइ व्यक्ति



क्यारेय permanent खराब होती नथी.

आ भवमां संयमनुं पालन जे करी न शकया ते मरीचिनो आत्मा भविष्यमां तीर्थकर बनीने अनेक परिषहोने सहन करे छे.

भरत चक्रवर्ती तो विनीता नगरीमां पाढा फरी गयां परंतु, मरीचिना मनमां अभिमान प्रसरी गयुं.. “मारा दादा प्रथम तीर्थकर, मारा पिता प्रथम चक्रवर्ती अने हुं प्रथम वासुदेव थइश... मुका नगरीमां चक्रवर्ती थइश अने अंतिम तीर्थकर थइश. मने तमाम पदवी प्राप्त थशे. तेथी हुं खेरेखर ज उच्च छुं. मारुं कूल खूब ज श्रेष्ठ छे.” आम अभिमान करवाथी तेमणे नीच गोत्र कर्म बांध्युं.

आपणे क्यारेय कोइपण वस्तुनो अहंकार करवो जोइए नहीं. अत्यारे जे पण मळ्युं छे ते आपणा पुण्यना उदय अथवा good luck ना आधारे मळ्युं छे, जे temporary होय छे.

एक वखत मरीचिना शरीरमां असह्य रोग उत्पन्न थयो. तेमने खूब पीडा थती हती, परंतु तेमणे संयम छोडी दीधो हतो. ए कारणथी कोइ तेमनी सेवा करी शकतुं नथी कारण के, संयमी साधुओ अविरतीनी सेवा करी शकतां नथी. मरीचिए विचार्युं के साधु तो पोताना शरीरनी पण चिंता करतां नथी तो मारा जेवा भ्रष्टनी सेवा कयांथी करे? माटे हुं मारी सेवा करे तेवो त्रिदंडी वेशवाळो शिष्य करीश.

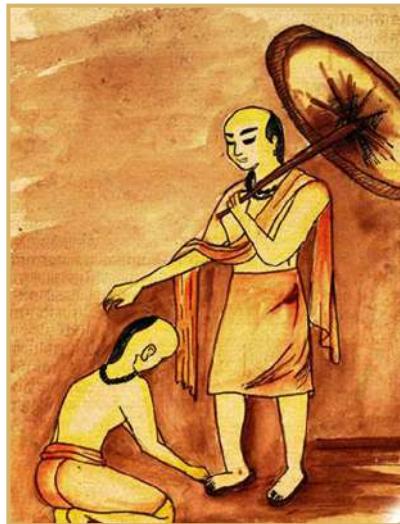
गमे तेवी परीस्थितिमां पण पोताना भावने जे शुद्ध अने शांत राखे छे ते ज प्रभुनो साचो वारसदार कहेवाय छे.

एक समये प्रभु पासे कपिल नामनो राजकुमार आव्यो तेमणे प्रभुनो उपदेश सांभळ्यो. पछी तेमणे विचित्र वेशवाळा मरीचिने जोयां तेमनी पासे आवीने धर्म सांभळ्यो. अने पूछ्युं के, साचो धर्म तमारी पासे छे के प्रभु पासे?

मरीचि ए विचार्युं के जो आ व्यक्तिने मारी वाणी गमी छे तो तेने मारो शिष्य बनावी लउं माटे भविष्यमां क्यारेय हुं बीमार पडुं तो मारी सेवा करे आवी स्वार्थ वृत्ति प्रगट थतां तेमणे जवाब आप्यो के धर्म मारी पासे पण छे अने धर्म त्यां पण छे. आवुं बोलीने तेमणे कपिलने पोतानो शिष्य बनावी दीधो.

आवी रीते प्रभुनी वाणीथी विपरीत
एटले के अलग समजावी मरीचि ए
पोतानो संसार खूब वधारी दीधो, क्यारेय
पण आपणे प्रभुना ज्ञान थी विरुद्ध खोटुं
बोलवुं जोइए नहीं.

प्रभुनी वाणीथी विपरीत प्रसुपणा
करवाथी मरीचिने प्राप्त थयेलुं अमूल्य एवुं
समकित एटले के सत्य ज्ञाननुं वमन थइ
गयुं. तेथी भगवान महावीरना जीवने 12
भव सुधी जैनत्व प्राप्त न थयुं.



MORAL:-

देवानप्रिय ! आ story परथी आपणने शुं बोध प्राप्त थाय छे?

आपणे ज्यारे पण प्रभुए बतावेल साधना आराधना करतां होइए त्यारे मनोबळ
मजबूत राखवुं जोइए.

जो आपणे नानी साधना पण करी शकतां नथी तो जेमणे जीवनभर प्रभुना
मार्ग पर चालवानो पुरुषार्थ कर्यो छे तेवा पूज्य साधु-संतो साथे हंमेशां विनयथी
रहेवुं जोइए अने अहोभावथी तेमनी साधनाने वंदन करवा जोइए.

कोइ व्यक्ति क्यारेय permanent खराब होती नथी माटे कोइना प्रत्ये दुर्भाव
करवो नहीं, द्वेष करवो नहीं. ज्यारे तेना कर्मो बदलाय त्यारे ते ज व्यक्ति भाविना
तीर्थकर बनी शकेछे.

आपणा स्वार्थ माटे क्यारेय खोटुं बोलवुं नहीं. प्रभुना वचनोथी विरुद्ध
क्यारेय बोलवुं नहीं.

पोतानी कोइपण सारी वात माटे अहंकार करवो नहीं पोताना रूप माटे, जाति
माटे, कूळ माटे, पैसा माटे, ताकात माटे, ज्ञान माटे, तप माटे, अहंकार करवो नहीं.

रोहिणेय चोर

राजगृही नामनी नगरी हती. श्रेणिक राजा त्यां राज्य करतां हतां. तेमना ज्येष्ठ (मोटा) पुत्रुं नाम अभयकुमार हतुं. तेओ अत्यंत बुद्धिशाळी होवाथी श्रेणिक राजाए तेमने राज्यना प्रधान बनाव्यां हतां.

ए नगरीमां एक चोर हतो. तेनुं नाम हतुं रोहिणेय. ए पण अत्यंत बुद्धिशाळी हतो. मोटी-मोटी चोरीओ एवी युक्तिपूर्वक करतो हतो के, एनी विरुद्धमां कोइ पुरावा मळता न हतां. घणां प्रयत्नो छतां ए पकडातो न हतो.

आ ए समय हतो ज्यारे भगवान महावीर सदेहे आ अवनी पर विचरण करतां हतां. रोहिणेय चोरना पप्पाए रोहिणेयनी नानी उंमरथी कान भंभेरणी करी हती के, “भूलेचूके पण भगवाननी वाणी सांभळतो नहीं, तारुं खूब नुकसान थशे.” एना पिताने डर हतो के भगवाननी वाणी रोहिणेय सांभळी लेशो तो ते चोरी करवानुं बंध करी देशे अने आपणा बाप-दादाना समयथी चाल्युं आवतुं कार्य बंध थइ थशे. नानी उंमरथी ज आवुं शीखवाडेलुं होवाथी रोहिणेयना मनमां आ वात बराबर बेसी गइ हती.

माता-पिता जेवा संस्कार आपेतेवा संस्कारो संतानो ग्रहण करे.

आपणा परम पुण्यनो उदय छे के, आपणने माता-पिताए धर्ममय सुसंस्कारो आप्यां छे.

एकवार एवुं बन्युं के, ते चोरी करवा माटे नीकळ्यो त्यारे, नजीकना क्षेत्रमां ज भगवाननी वाणीनो अविरत प्रवाह वही रह्यो हतो. रोहिणेय चोरे पोताना बन्ने कानमां आंगळी खोसी दीधी. जेथी चालतां-चालतां भूलेचूके भगवाननी देशनाना शब्दो कानमां संभळाइ न जाय.

पण नियतिए जे धार्युं होय ते कोइ बदली शकतुं नथी. माटे ज्यारे पण एवो कोई कठिन समय आवे त्यारे नियतिनो स्वीकार करी समभाव राखवाथी ए कठिन समय शांतिथी पसार थई जाय.

बराबर ए ज समये एना पगमां एक कांटो वाग्यो. ए कांटो काढवा माटे तो कानमांथी आंगळीओ काढवी ज पडे. प्रभुनी देशना तो चालु ज हती. एना कानमां प्रभुना त्रण वाक्य अनिच्छाए पण पडी गयां.

1. देवोना पग क्यारेय जमीनने अडे नहीं.
2. देवोनी आंखनी पलक क्यारेय झपके नहीं.
3. देवोनी माळाओ क्यारेय करमाय नहीं.

भगवानना आटलां वाकयो कानमां गयां
ते रोहिणेयने जरापण गम्युं नहीं.



एकवार बन्युं एवुं के रोहिणेय चोर पकड़ाइ गयो, पण एनी विरुद्धमा
कोइ पुरावा मळतां न हतां. पुरावा वगर तो गुनो साबित न थइ शके एटले
अभयकुमारे एक युक्ति करी. एमणे महेलना एक room ने देवलोक जेवो बनाव्यो.
दासीओने देवी जेवी वेशभूषा करवा कह्युं. साक्षात् देवलोक जेवुं वातावरण ऊभुं
कर्यु अने रोहिणेयने देव शय्या जेवा सुसज्जित पलंग पर बेहोश करी सूवडावी
दीधो.

ज्यारे होशमां आवे त्यारे एने एम ज लागे के 'मारो जन्म देवलोकमां ज थयो
छे.' बधां देवलोक जेवी positionमां बेसी एना जागवानी राह जोवा लाग्यां. जेवो
रोहिणेय ऊघमांथी जाग्यो, त्यारे एने एम ज लाग्युं के मृत्यु पछी मारो जन्म
देवलोकमां थयो छे. तरत ज दासीओ चामर वीँझवा लागी अने देवीना रूपमां
रहेली दासीओए रोहिणेयने प्रश्न कर्यो के- "अहो! महा पुण्यशाळी देव! आपे एवा
तो कयां शुभ कार्यो कर्या, महा पुण्य कर्या के आपनो जन्म आ देवलोकनी
देवशय्यामां, देवस्वरूपे थयो"? रोहिणेय पण आश्वर्यचक्ति हतो के 'हुं आ

देवलोकमां कयांथी आवी गयो?'
पण तरत ज एने संभळायेला
भगवानना त्रण वाकयो याद आवी
गयां.

देवलोकना देवोना पग
जमीनने अडे नहीं, पण अहीं तो
बधांना पग जमीनने अडेलां छे.

देवो आंखोनी पलक
झपकावे नहीं, पण अहीं तो



बधांना आंखनी पलको झापकी रही छे.

देवोनी माळाओ करमाय नहीं, पण अहीं तो बधांनी माळाओना फूलो थोडा करमायेलां लागे छे.

बुद्धिशाळी रोहिणेय आखुं नाटक समजी गयो अने खोटा जवाबो आपवा लाग्यो के 'हा! गतजन्ममां में घणां दान-पुण्य करेलां छे वगेरे!' रोहिणेय चोर मायाजाळमां फसायो नहीं. अभयकुमारनुं आखुं planning fail गयुं अने रोहिणेयने छोडी देवामां आव्यो.

आ घटनाथी रोहीणेयने विचार आव्यो के पराणे सांभळेली भगवाननी वाणीना प्रभावथी ज हुं बची गयो. मारा पिताए केम मने भगवाननी वाणी सांभळवानी ना पाडी हशे ? जो हुं खरेखर ज भगवाननी वाणी सांभळुं तो मने केटलो बधो लाभ थाय!

गत जन्मोना एना संस्कार जागृत थ्या, लोकोत्तर पुण्य उदयमां आव्या. रोहिणेय भगवान पासे गयो. भगवाननी क्षमा याचना करी अने भगवान पासे दीक्षा ग्रहण करी पोतानुं आत्मकल्याण साधी लीधुं.

MORAL -

देवानुप्रिय! आ सत्य कथा परथी आपणे शुं सार ग्रहण करवानो छे?

ए ज के, प्रभुनी वाणी अमृतथी पण चढियाती होय छे. अमृत तो आपणने फक्त एकवारना मृत्युथी कदाच बचावी शके छे पण प्रभु वाणी तो जन्मोजन्मना मृत्युथी बचावी शके छे. माटे आपणे गुरुभगंवतो द्वारा पीरसाती जिनवाणीनो भरपूर लाभ लइ आपणा आत्माने तारी लेवो जोडिए.



मेघकुमार

सब्ब भूयप्प भूयस्स (श्री दशवैकालिकसूत्र-अध्य.-4/9)

जगतना सर्व जीवो मारा जीव समान ज छे.

परमात्मानुं आ एक वचन...

जो आपणो जीवन मंत्र बनी जाय तो आपणे केटला बधा पापथी बची शकीए
आपणी अंदर जीवदयानो गुण प्रगट थई जाय!

आजे आपणे एक एवी सत्यकथा जोईए के जीवदयानी भावनाथी आपणे
आत्मा केटलो शुद्ध बनी शके छे.

राजगृही नामनी नगरी हती. त्यां श्रेणिक राजा अने धारीणी नामना राणी हता.
तेमनो मेघ नामनो एक पुत्र हतो. एकवार राजकुमार मेघे परमात्मानी देशना सांभळी
अने तेना मनमां वैराग्य भाव जागृत थयो. तेने सत्य समजाई गयुं अने तेणे माता-
पितानी आज्ञा लईने परमात्माना श्रीमुखेथी संयम ग्रहण कर्यो.

परमात्माना सर्व संतोमां तेओ दीक्षा पर्यायमां सर्वथी नाना होवाथी संयमनी
प्रथम रात्रे तेमनी पथारी उपाश्रयमां सौथी छेल्ले दरवाजा पासे करवामां आवी.
रात्रिना पहेला तथा छेल्ला प्रहरमां स्वाध्याय आदिना कारणे तथा परठवा माटे
अन्य साधुओने बहार जवा आववानुं सतत चालु रह्युं, जेना कारणे मेघमुनिने ते
साधुओना हाथ-पग, रज आदि लागवाथी तेमनी निद्रा बरोबर न थई शकी.

नवदीक्षित मेघमुनिथी आ सहन न थई शक्युं. तेमने विचार आव्यो के,
गईकाल सुधी तो हुं राजकुमार हतो, तो सर्वे मारुं केटलुं मान-सन्मान करता हता!
मारी साथे सारी रीते वातचीत करता हता अने आजे मुनि जीवननी पहेली ज रात्रे
मारे आटलुं बधुं सहन करवुं पडयुं!

सवार थतां ज भगवान पासे जईश अने भगवाननी आज्ञा लईने पाछो
गृहस्थवासमां जतो रहीश. आ रीते आर्तध्यानमां तेओनी आखी रात पसार थई
अने बीजे दिवसे सवारे ज तेओ भगवान पासे पहोंची गया..

संयममां अनेक कष्टो अने परिषहो आवे छे... जे समता भावे तेमनो स्वीकार

करे छे, समभावे सहन करे छे ते ज कर्मनो क्षय करीने मोक्षमार्ग तरफ आगळ वधे छे.

बीजे दिवसे सवारे मेघमुनि भगवान पासे पहोंच्या. भगवान तो केवळज्ञानी हता. तेओ मेघ मुनिना भावोने जाणी गया अने मेघमुनिने कह्युं “हे मेघ, तुं जागृत था! तुं विचार कर! तारा पूर्वजन्मने याद कर... त्यारे ते केटलुं सहन कर्युं हतुं अने आजे थोडा दुःखथी तुं श्रेष्ठ एवा संयमने छोडवानो विचार करे छे? हे मेघ, तुं विचार कर!”

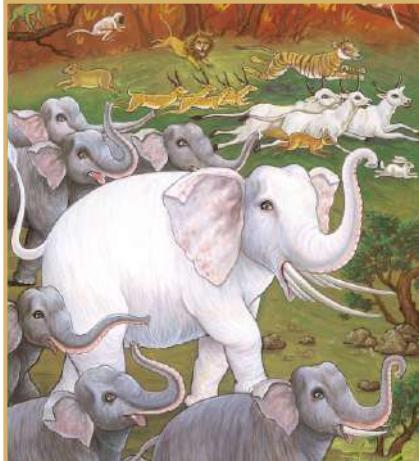
“आजथी पूर्वना त्रीजा भवे तुं मेरुप्रभ नामे हाथीओनो युथपति हतो. एक समये वनमां दावानळ लागवाथी (आग लागवाथी) तुं त्यांथी भाग्यो अने

एक सरोवरमां पाणी पीवा गयो. त्यां तुं कादवमां खूंची गयो. जेम-जेम बहार नीकळवानो प्रयत्न करवा लाग्यो तेम-तेम वधु खूंचतो गयो. बराबर एज समये तारो शत्रु एक नवयुवान हाथी त्यां आव्यो अने तेणे तारा पर प्रहार कर्यो. ते प्रहारथी तुं मृत्यु पारी विंध्याचलमां फरी हाथी थयो.

ते वनमां एकवार दावानळ लाग्यो. दावानळने जोईने तने जातिस्मरण ज्ञान थयुं.”

जातिस्मरण ज्ञान एटले आपणने पूर्वना भवनुं याद आववुं, जे आपणी अंदरमां deep memory सुधी गयुं होय छे. भविष्यमां ते memory बहार आवे छे. तेथी हंमेशां सारी वातो, सारा संस्कारो, प्रभुना वचनोने deep memory मां राखवानो प्रयत्न करवो जोईए.

हाथीने जातिस्मरण ज्ञान थतां भविष्यमां दावानळ लागे तो तेनाथी बचवा माटे तेणे मोटी विशाळ गोळाकार जग्यामांथी वृक्ष उखेडीने बहार फेंकी दीधा अने ज्यारे आग लागे त्यारे बधानुं रक्षण थाय एवुं एक मांडलुं तैयार कर्यु. फरीथी एकवार



वनमां दावानळ लागता बधां
प्राणीओ पोताना जीवननी
रक्षा करवा माटे त्यां आवीने
ऊभा रही गया. आखुं मांडलुं
खीचोखीच भराई गयुं. क्यांय
चालवानी पण जग्या न हती.
ते समये हाथीने पगमां
खंजवाळ आवता
खंजवाळवा माटे एक पग
ऊंचो कर्यो. ते जग्याए एक
ससलुं आवीने बेसी गयुं.

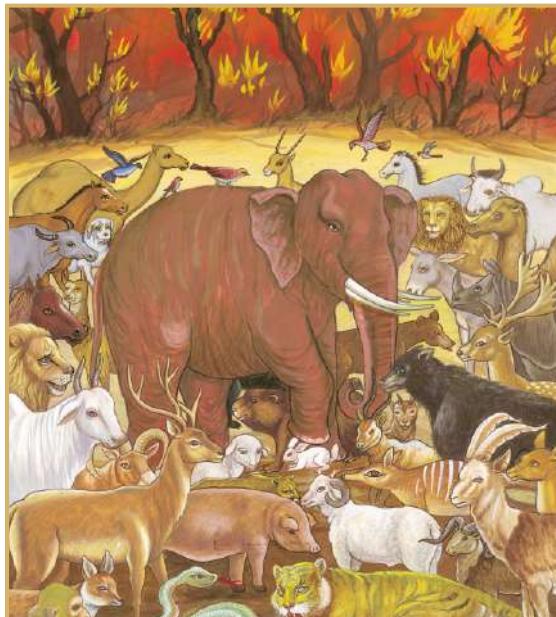
ससलांनी रक्षा खातर
हाथी एट्ले के मेघमुनिना

जीवे एक पग ऊंचो ज रहेवा दीधो. दावानळ शांत थतां बधा प्राणीओ पोतपोतानी
जग्याए चाल्यां गया. ससलुं पण चाल्युं गयुं. ते जोईने हाथीए पग नीचे मुकवा प्रयत्न
कर्यो पण सतत त्रण दिवस सुधी एक ज स्थितिमां उभां रहेता पग अधधर रहेवाथी
अकडाई गयो हतो तेथी हाथी पडी गयो. त्रण दिवसनी अपार वेदना वच्चे आयुष्य
पूर्ण करी तेणे अनुकंपा, जीवदया अने परमार्थना भावोने कारणे शुभ आयुष्यनो बंध
कर्यो अने राजकुमार रूपे जन्म लीधो.

हाथी केवी रीते एक पग उपर ऊभो रही शक्यो हशे?

एट्ला माटे के तेनी अंदरमां जीवदया हती. मारा जेवो ज दरेकनो जीव छे, एवुं
ज्यारे आपणे मानीए छीए त्यारे आपणे कोईने दुःखी जोई शक्ता नथी, कोईने दुःखी
करी शक्ता नथी.

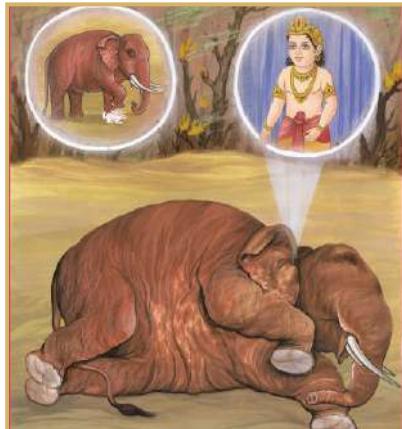
परमात्माए मेघमुनिने समजावतां कह्युं के, "हाथीना भवमां पण आटली
अनुकंपा करी, आटली शारीरिक पीडा सहन करी अने आ जन्ममां आटली नानी
तकलीफथी तुं डरी गयो! आवो दुर्लभ मनुष्यभव अने श्रेष्ठ संयमने पामी साधुओना



चरणस्पर्शथी तने तकलीफ पडे छे?

हे मेघ ! ते जे ब्रत स्वीकार्यु छे, तेनुं
सारी रीते पालन करी भवसागरथी तरी
जा."

प्रभुनी वाणीथी मेघमुनि ब्रतमां
स्थिर थई गया.. संयम अने तपथी
आत्माने भावित करता आयुष्य पूर्ण करी
विजय नामना अनुत्तर विमानमां गया.
त्यांथी च्यवीने महाविदेह क्षेत्रमां उत्पन्न
थईने मोक्ष गतिने प्राप्त करशे.



MORAL:-

देवानुप्रिय ! मेघकुमारे हाथीना भवमां पोताना शरीरनी परवा कर्या वगर पण
ससलांनी, एक नानकडा जीवनी दया पाळी तो तेने केटलुं उत्तम फळ मळ्युं..? आ
story परथी आपणे आपणा जीवनमां शुं शिख लईशुं?

दरेक जीव आपणी समान छे ए वातने हंमेशा याद राखवी जे पीडा आपणने
थाय ते ज पीडा दरेक जीवने थरी होय छे..

जो हुं मने दुःखी ना करी शकुं, जो हुं दुःख सहन न करी शकुं तो बीजाने कंई
रीते दुःख आपी शकुं!

मारी deep memory मां प्रभुना संस्कारो, प्रभुना वचनोने save करवा छे,
जे मने भविष्यमां पण साचो रस्तो बतावे.

जो मारा प्रभु आटला कष्टो सहन करता होय, प्रभुना मार्ग पर चालनारा दरेक
संयमी आत्माओ समझावे कष्टो सहन करता होय, तो मारे पण नाना नाना दुःखोमां
disturb थवुं नथी, रडवुं नथी.

मारी आसपासमां रहेला दरेक जीवोने शाता केम मळे, तेमनुं दुःख केवी रीते
दूर करी शकुं, तेवो पुरुषार्थ करवो छे.

Helpful Hand



“ पुण्योदयथी मळेला
आपणा बने हाथने
आपणे हेल्पफुल
बनाववा जोडिए. ”

आपणा आगममां आवती एक सत्यघटना विषे जाणीए.

एकदा श्रीकृष्ण वासुदेव पोताना लश्कर साथे नगरचर्च्या अर्थे हाथी पर बेसी राजमार्ग परथी पसार थई रह्यां हता. मार्ग पर तेओऐ जोयुं के, एक वृद्ध, अशक्त व्यक्ति ईटना ढगला पासे उभी छे अने एक-एक इंट लई पोताना घर पासे मूकी रही छे. वृद्ध अशक्त होवाथी वधु वजन उंचकी शके एम न हतो. श्रीकृष्ण महाराजे पोते हाथी उपर बेठां-बेठां ज हाथ लंबाव्यो अने एक इंट लई वृद्धना घर पासे मूकी.

महाराजा श्रीकृष्णनुं आ कार्य जोई लश्करनी जेटली व्यक्तिओ त्यां हती, ते बधांए इंटो उपाडी-उपाडीने वृद्धना घर पासे मूकी दीधी. सांज सुधी जे कार्य चालवानुं हतुं, ते मिनिटोमां थई गयुं. वृद्ध अत्यंत संतोष पाम्यो. तेणे श्रीकृष्ण वासुदेव पासे अत्यंत अहोभाव अने उपकारभाव व्यक्त कर्यो.

श्रीकृष्ण वासुदेव अने लश्करनां सर्वे व्यक्तिओना मुख पर पण कोईकने मदद कर्यानो संतोष झळकवा लाग्यो अने स्मित रेलावा लाग्युं. श्रीकृष्ण महाराज लश्कर साथे आगळ वधी गयां.



आ सत्य घटना आपणे जाणी आपणा भावि तीर्थकर प्रभुना पूर्व भवनी.
 हवे जाणीए वर्तमान चोवीसीना प्रथम तीर्थकर प्रभु क्रष्णदेवना
 पूर्व भवनी!



भगवानना आत्माए पूर्वना भवमां जीवानंद वैद्य रूपे जन्म धारण कर्यो हतो. ए जन्ममां तेमना ५ मित्रो हतां.

एकदा तेओए रस्ता पर एक तपस्वी मुनिराजने पसार थतां जोया. तेओे कुष रोगथी (leprosy) पीडित हतां. तेओना शरीरमां कीडा पडी गया हतां, पण तेओे असह्य वेदनाने समताभावे सहन करी रह्यां हतां.

जीवानंद वैद्य तथा तेमना मित्रोए ते मुनिनो ईलाज करवानो विचार कर्यो. ईलाज करवा माटे आवश्यक लक्षपाक तेल, गोशीष चंदन अने रत्नकंबलनी जरूर हती. तेनी व्यवस्था करी अने गाममांथी एक मरेली गायने लई आव्या.

त्यारबाद तेओे तपस्वी मुनिराज ज्यां ध्यानमां स्थिर थया हता, त्यां गया. मुनिराजने वंदन नमस्कार करी रोगनुं निवारण करवा माटे ध्यानमां विक्षेप पाडवा बदल क्षमा याचना करी.

सर्व प्रथम अतिशय उष्णताना गुणवाळा लक्षपाक तेलनुं मालिश कर्यु. उष्णताना कारणे मुनिराजना शरीरना मांसमा रहेलां कीडाओ बहार आवी गया. मित्रोए मुनिराजने रत्नकंबल ओढाडी दीधुं. रत्नकंबलनी ठंडकना कारणे बधां

कीड़ाओ रत्नकंबलमां आवी गया. ते कीड़ाओने तेओए मरेली गायना कलेवर पर मूकी दीधां. आ रीते त्रण वार कर्यु, जेथी मुनिराजना हाडकां सुधी पहोंचेलां बधां कीड़ाओ बहार आवी गया अने मुनिराज निरोगी थई गया. त्यारबाद छए मित्रोए मुनिराजने गोशीर्ष चंदननो लेप करी दीधो. जेथी मुनिराजने अतिशय शाता वळी गई.

देवानुप्रियो ! ए छए मित्रोए मुनिराजने तो शाता पहोंचाडी ज, ते साथे कीड़ाओनुं पण ध्यान राख्यु. तेमने पण मरवा न दीधां. आ कार्य माटे तेओए केटली महेनत लीधी ! तेओए पोताना आनंद-प्रमोदना समयने छोडी, पोताना शरीर, श्रम अने समयने सेवाना श्रेष्ठ कार्यमां लगाडी दीधां.

MORAL :

देवानुप्रियो! बन्ने भगवाननां आत्माओए आम करतां-करतां ज उत्कृष्ट पुण्यनो बंध कर्यो अने छेल्ले फळ स्वरूपे तीर्थकर नाम गोत्र कर्मनो बंध करी लीधो.

शुं शीखवानुं छे आपणे आ सत्य घटनाओथी !

घणां पर आवेली घणी आपत्तिओने हटाववा, दूर करवा आपणे सक्षम नथी, हर व्यक्तिने मदद करवा समर्थ नथी, पण कोइ पर आवेली कोइक आपत्तिने हळवी करवा, कोई कार्यमां थोडी मदद करवा तो आपणे समर्थ छीए ने! जेटलुं आपणाथी थइ शके एटलुं तो आपणे चोककस करवुं जोइए. पुण्योदयथी मळेला आपणा बन्ने हाथने आपणे हेल्पफुल बनाववा जोइए.

"आ हाथे देवुं अने आ हाथे लेवुं" ए दुनियानो नियम छे. कोइने मदद करी हशे तो भविष्यमां आपणने ज्यारे मददनी जरूर हशे, त्यारे मदद मळी रहेशे.

आपणे पण आजथी शुं नियम लईशुं?

जेटली बनी शके तेटली साधु-संतोनी, वडीलोनी अने अन्योनी सेवा करीशुं. दुःखी पीडितोने शाता पहोंचाडीशुं. पुण्य उदये मळेलां आ बन्ने हाथोथी अन्योने सहाय करीशुं, help करीशुं.





उवसग्गहर स्तोत्र



उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मधणमुकं,
विसहर विस निनासं, मंगल कल्लाण आवासं... 1

विसहर फुल्लिंगमंतं, कंठे धरेई जो सया मणुओ,
तस्स गह रोग मारी, दुष्ट जराजंति उवसामं... 2

चिढ्हउ दूरे मंतो, तुज्ज्ञ पणामोवि बहु फलो होइ,
नर तिरियेसु वि जीवा, पावंति न दुख दोगच्चं... 3

तुह सम्मते लद्धे, चिंतामणि कप्पपायवब्भहिए,
पावंति अविघेण, जीवा अयरामरं ठाणं... 4

इह संथुओ महायशा, भत्तिभर निब्भरेण हियएण,
ता देव ! दिज्ज बोहिं, भवे भवे पास जिणचंद... 5



आहार विवेक

(राग – हे जीव जरा सांभळ...)

आहार विवेक शीखजे, रसना पर राज करजे,
आहार संज्ञा जीतीने, प्रभु जेवो बनजे!

रसासक्तिनो त्याग करजे, तपमां रमणता धरजे,
अभक्ष्य भोजनथी, दूर हंमेशा रहेजे,
एठुं कदी ना मूळजे, रेंकडी पर कदी ना खाजे,
संकल्प एवो करीने, प्रभु जेवो बनजे! 1... आहार...

रात्री भोजन ना करजे, थाळी धोइ पीजे,
नोनवेज होटलमां तो, क्यारेय ना जजे,
खावा माटे ना जीवजे, जीववा माटे खाजे,
संकल्प एवो करीने, प्रभु जेवो बनजे! 2...
आहार...



घरनी रसोइ जमजे, कच कच कदी ना करजे,
सात्विक भोजन करी, चौविहार सदा करजे,



आतमनी अणाहरकताने,
नजर सामे धरजे,
संकल्प एवो करीने,
प्रभु जेवो बनजे! 3... आहार...

ગુણસમૃદ્ધિ

(રાગ – કौન હું મैં, કહાં સે આયી...)

કોહમ મારો પ્રશ્ન છે, સોહમ એનો જવાબ છે,
અહ્મ હવે બનવું મારે, એ જ એક ખવાબ છે.



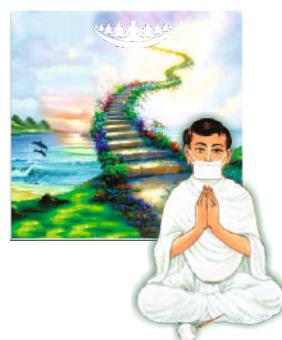
પતંગ હવે ચાગાવીશ નહીં, ને હોળી કદી રમીશ નહીં,
ફટાકડાં તો ફોડીશ નહીં, ને ઘોંઘાટ કદી કરીશ નહીં,
વિનય.. વિવેક પૂર્વક રહી, સહુના દિલ જીતવા છે,
સ્વાર્થ છોડી પરમાર્થ, હવે મારે કરવા છે! 1... કોહમ...

હિંસા.. અસત્ય... ચોરીથી, દૂર મારે રહેવું છે,
મનલાયક ન થાય તો, લેટ ગો કરવું છે,
નાની એવી જિંદગીમાં, રાગદ્રેષ શા કરવા છે,
કષાયોને તજી, ભગવાનને ભજવા છે! 2... કોહમ...



બધાં સાથે ન પ્રતાથી, મારે હવે રહેવું છે,
ગુરુઆજ્ઞાનું પાલન, સદા મારે કરવું છે,
અવગુણોને દૂર કરી, પાપ મારે ખપાવવા છે,
સદગુણોનો સાથ મેલ્છી, પુણ્ય મારે કમાવવા છે! 3... કોહમ...

વેર ભાવો તજીને, રમણીય મારે રહેવું છે,
ઉદ્યભાવો જાણીને, સમભાવે સહેવું છે,
સમર્પણતાથી શૂન્ય બની, ગુરુ સંગ જવું છે,
પરમાત્મના પથ પર, પગલું હવે ભરવું છે! 4... કોહમ...



ભવને સુધારી લ્યો

(રાગ – ટીમ ટીમ કરતે તારે...)

પુણ્ય કમાઈ લ્યો, પાપ ખપાવી દ્યો
કહે પ્રભુ વારંવાર, ભવને સુધારી લો! પુણ્ય...

અરિહંત જેવા દેવ મળ્યાં,
સદભાવો અમારા ફળ્યાં.
સિદ્ધ જેવા સાધ્ય મળ્યાં,
સત્કાર્યો અમારા ફળ્યાં.
વંદન કરો વારંવાર,
ભવને સુધારી લ્યો! પુણ્ય...

નિર્ગ્રથ ગુરુ મળ્યાં,
ભવના ફેરા ટલ્યાં.
સર્વશ્રેષ્ઠ આગમ મળ્યાં,
મિથ્યા ભાવો દૂર ટલ્યાં
સદ્વાંચન કરો વારંવાર,
ભવને સુધારી લ્યો! પુણ્ય...

સંસ્કારી પરિવાર મળ્યો,
જન્મથી જૈનર્ધર્મ જડ્યો.
ઉપકારી શ્રીસંઘ મળ્યો,
ધર્મક્ષેત્ર જેવો મિત્ર જડ્યો
સત્સંગ કરો વારંવાર,
ભવને સુધારી લ્યો! પુણ્ય...



॥ श्री महावीराय नमः ॥

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ नमो नाणस्सः ॥

श्री ग्रेटर बोम्बे वर्धमान स्थानकवासी जैन महासंघ

Shree Greater Bombay Vardhman Sthanakvasi Jain Mahasangh

: संचालित :

मातुश्री मणीबहेन मणशी भीमशी छाडवा धार्मिक शिक्षण बोर्ड

Matushree Maniben Manshi Bhimshi Chhadva- Dharmik Shikshan Board,

Jayant Arcade, office No 202, 2nd floor, M.G. Road, Rajawadi Signal, Ghatkopar (E), Mumbai- 400077

E-mail: jainshikshanboard@gmail.com

Website: www.jaineducationboard.org

Our Website

- Contact Details of Shikshan Board office (Phone & Email)
- News and Events related to examination and breaking news
- Know Goals and Visions of Board
- Facility to enroll for forth coming exam online
- Historical exams and answer papers available from 2016
- Downloadable version of Shreni exam books
- Schedule of forth coming Shreni exams available
- Avail Jain Pathavali Online
- Access Photographs of various events
- View Past exams results

वेब साइटमां माहिती

शिक्षण बोर्डनी ओ?फस्ना फोन नंबर तथा इ-मेल मेळवी शक्शे.
बोर्ड द्वारा आगामी परीक्षानी माहिती विगतवार मूकवामां आवशे.

बोर्डना हेतु तथा छ्येय जाणवा मळशे.

यर बेठा ऑनलाईन रजिस्ट्रेशन करी शक्शे.

2016 थी परीक्षाना पेर तथा जबाबो मेळवी शक्शे.
दोक श्रेणीनो अस्थासक्रम डाउनलोड करी शक्शो.

परीक्षा मालेनी माहिती समयसर मळी शक्शे.

जैन पाठावली ऑनलाईन मेळवी शक्शो.

प्रोग्रामना फोटा जोई शक्शो.

भूलूलू अपेली परीक्षानं परिणाम जोई शक्शो.

(राग - सुखनी छाया शोधी रह्यो छुं.)

आगम सरोवर लहेराइ रह्यो छे, केम रहे छे प्यासो... (2)

श्रुतद्रह छलकाइ रह्यो छे, केम रहे छे तरस्यो... (2)

प्रभु मुखेथी गंगोत्री वही, त्रिपदीनी धारा महीं;
सत्य समाणुं सर्व तेमां, सर्व रहस्यो प्रगट्या एमां;
सर्व श्रेष्ठ मळी गयुं छे, केम रहे छे अळगो... (2) आगम...

अंग, उपांग, मूळने छेद, ए छे मुख्य चारभेद;
स्वाध्याय कर्यो नहीं एनो, केम नथी तने खेद;
जिनवाणी अविरत वरसे, केम रहे छे तरस्यो... (2) आगम...

अर्थ रूपे प्रभुए प्रवर्तावी, सूत्र रूपे गणधरोए गुंथी;
क्षमा श्रमणजीए ग्रंथ रूपे, आपणा सुधी पहोंचाडी;
ज्ञान सरिता वही रही छे, केम रहे छे प्यासो... (2) आगम...

आवश्यक करणी करवानी छे, ए भूली नहीं जातो;
त्रीतत्वना गुणला गाजे, व्यर्थना गीतो ना गातो;
गुरुवाणीनो धोध वहे छे, रही ना जातो प्यासो... (2) आगम.

